कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QDI : +91(11) 23387887
पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल
kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय–सूची

आवरण कथा : राजनाथ सिंह बने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष
रिपोर्ट..... 6

प्रदर्शन/रैलियां
कांग्रेस की सांप्रदायिक राजनीति के खिलाफ सड़कों पर उतरी भाजपा..... 9
जनाक्रोश रैली..... 12
अटल शंखनाद रैली : लखनऊ..... 30

लेख
नेहरु का सेकुलरिज्म भी हिन्दू मूल सिद्धांतों पर आधारित है
–**लालकृष्ण आडवाणी**..... 14
'सलाह मशविरा' शब्द के दो अलग–अलग अर्थ
– **अरुण जेटली**..... 16
ना विरोध, ना बातचीत, केवल कठोर कार्रवाई हो
– **यशवंत सिन्हा**..... 19
'युवराज' की ताजपोशी
– **प्रभात झा**..... 21
देश के लिए खतरा बनता नक्सलवाद
–**विकास आनन्द**..... 22

पं. दीनदयाल उपाध्याय पुण्यतिथि पर विशेष
कुशल संगठक व विचारक राजनेता
–**संजीव कुमार सिन्हा**..... 23

विधानसभा चुनाव पर विशेष
मेघालय, नगालैण्ड और त्रिपुरा में चुनाव का शंखनाद
–**राम प्रसाद त्रिपाठी**..... 25

मुख्य पृष्ठ : *भाजपा के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह व पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी*

ऐतिहासिक चित्र

1960 में लखनऊ में जनसंघ के अधिवेशन में श्री जगन्नाथ राव जोशी, पं. दीनदयाल उपाध्याय, श्री अटल बिहार वाजपेयी एवं अन्य

देशभक्ति और पैसा

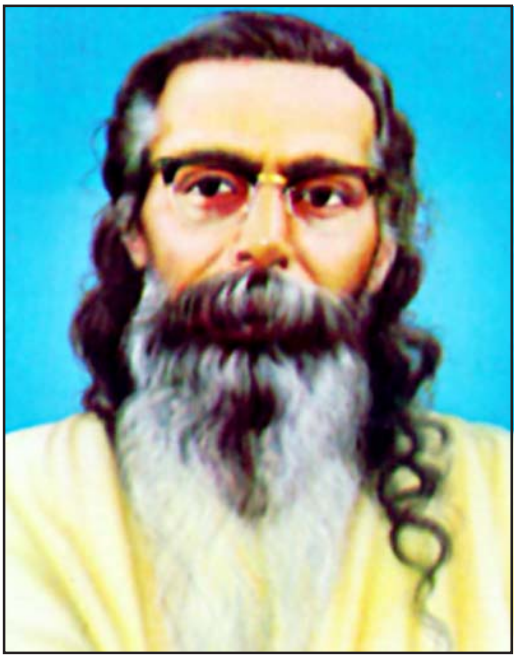

प्राय: लोग समझते हैं कि पैसे से लोगों में देशभक्ति जाग्रत की जा सकती है; पर श्री गुरुजी इस विचार के समर्थक नहीं थे। उनका मानना था कि देशभक्ति श्रद्धा का विषय है। उसे पैसे से प्राप्त नहीं किया जा सकता। 1965 में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। युद्ध के दौरान पाकिस्तान ने अपने कुछ छतरीधारी सैनिकों को पंजाब में उतार दिया। यह सूचना मिलते ही सरकार ने घोषणा की कि जो कोई उन सैनिकों को पकड़वायेगा, उसे नकद पुरस्कार दिया जायेगा। श्री गुरुजी ने नेताओं से कहा कि यह युद्ध का समय है। इस समय प्रत्येक नागरिक में देशभक्ति की भावना हिलोरें ले रही है। अत: हमें जनता से यह आह्वान करना चाहिए कि इन दुश्मनों को पकड़ना हमारा कर्तव्य है। पैसे का लालच देकर लोगों की भावना को हल्का नहीं करना चाहिए। यदि पैसे के लालच में लोग दुश्मन सैनिकों को पकड़ेंगे, तो हो सकता है कि पैसे के लालच में वे उन्हें छोड़ भी दें। देशभक्ति को पैसे से तोलना ठीक नहीं है।

-'श्री गुरुजी बोधकथा' से साभार

व्यंग्य चित्र

'कमल संदेश' परिवार की ओर से सभी सुधी पाठकों को ***वसंत पंचमी*** *की हार्दिक शुभकामनाएं।*

वर दे, वीणावादिनी वर दे!
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे!

संपादकीय

इसलिए है भाजपा 'पार्टी विद ए डिफरेंस'

जनसंघ के दिनों की याद आ गई। ''आप कहां हैं, फौरन दिल्ली आ जाइए, आपको अध्यक्ष पद स्वीकार करना है, दल का यह फैसला है।'' जिन्हें दायित्व दिया जाता था, वे इस खबर से कोसों दूर रहते थे। दायित्व स्वीकारने से पूर्व वो कहते थे कि यह दायित्व मैं तब स्वीकार करूंगा जब आप सभी लोग मुझे संभालने की जिम्मेदारी लेंगे क्योंकि अध्यक्ष तो निमित्त होता है। संगठन तो सामूहिकता से चलता है। वर्षों बाद ऐसा हुआ कि राजनाथ सिंह जी अपने लोकसभा क्षेत्र गाजियाबाद में प्रवास पर थे, उन्हें सूचना देकर दिल्ली बुलवाया गया और कहा गया कि दल की इच्छा है कि आप अध्यक्ष बनें। इसीलिए जनसंघ के दिनों की याद आना स्वाभाविक है। राजनीति में जब पदों के लिए गलाकाट प्रतिस्पर्धा चल रही हो तब यदि कोई दल इस तरह का उदाहरण प्रस्तुत करता है तो वह निश्चित ही प्रशंसनीय कहा जाएगा। भाजपा को बधाई! पद पर आने के लिए, आने के बाद बने रहने के लिए, बने रहने के साथ-साथ सदैव बने रहने के लिए लोग क्या-क्या नहीं करते!

श्री राजनाथ सिंह को अध्यक्ष निर्वाचित किया जाना जितना महत्वपूर्ण है उससे कम महत्वपूर्ण नहीं है इस बात पर विचार करना कि जो साहस निर्वतमान अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने इस्तीफा देकर दिखाया है वह स्वत: ही भाजपा को 'पार्टी विद ए डिफरेंस' की राह पर ले जाती है। ''नितिन गडकरी का यह कहना कि जब तक मैं दोषमुक्त नहीं हो जाता हूं मैं इस पद पर नहीं आऊंगा'' उनके संघ के स्वयंसेवक होने का परिचायक है। राजनीति की यह संस्कृति यदि हम जीवित नहीं रख पाए तो भारत भटकाव के मार्ग पर चला जाएगा।

वर्तमान राजनीति की बदहाली की लम्बी दास्तान है। कांग्रेस ने भारत में एक विकृत राजनीतिक संस्कृति की शुरूआत की है जो न केवल कांग्रेस के लिए बल्कि देश के लिए घातक है। कांग्रेस ने राजनीति में व्यक्तिगत हमला और बदले की भावना के साथ-साथ विरोधी दलों के नेताओं की छवि बिगाड़ने का जो सिलसिला शुरू किया है पता नहीं वह कांग्रेस को किस मुकाम पर ले जाएगा? यह बात तो जाहिर हो गई कि कांग्रेस राजनीति में 'विकृति' है और भाजपा 'संस्कृति की प्रदीप्ति' है।

सन् 2013-14 भारतीय राजनीति के लिए चुनौती भरा वर्ष है। कांग्रेस चाहेगी कि विरोधी दलों के नेताओं का दमन हो और वे येन-केन-प्रकारेण सत्ता को हथियाए रहे। जबकि देश की भावना इसके ठीक विपरीत है। देश परिवर्तन चाहता है। ऐसे समय में एनडीए के मुख्य घटक दल होने के नाते भाजपा और भाजपा अध्यक्ष की जिम्मेदारी महत्वपूर्ण हो जाती है। श्री राजनाथ सिंह को 'पार्टी विद ए डिफरेंस' की छवि बरकरार रखते हुए देश में एनडीए का राज लाना होगा। वे अनुभवी हैं। ऊर्जावान हैं। कुशल प्रशासक रहे हैं। अध्यक्ष पद उनके लिए नया नहीं है। मृदुभाषी हैं। छोटे कार्यकर्ता से वे इस ओहदे पर आए हैं। उनमें कार्यकर्ता भावना सतत् बनी रहती है। यही कारण है कि उन्होंने अध्यक्ष पद संभालते ही दो टूक शब्दों में कहा कि हम सब लोग मन बना चुके थे कि गडकरी जी को दुबारा अध्यक्ष बनाना है। संविधान में संशोधन भी इसीलिए हुआ था। पर जिस तरह से कांग्रेस ने उनकी छवि बिगाड़ने की कोशिश की है हम उसे सफल नहीं होने देंगे। इतना ही नहीं उन्होंने कहा कि नितिन जी! पूरी पार्टी आपके पीछे खड़ी है। भाजपा में आज ऐसी ही एकजुटता की आवश्यकता है।

निवर्तमान अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी कल्पनाशीलता के धनी हैं। नयी-नयी रचना करने में उनका अटूट विश्वास है। नए-नए प्रयोग कर उसे क्रियान्वित करना उनका मूल स्वभाव है। वे रचनाधर्मी हैं। उन्होंने राजनीति को पेशा के रूप में नहीं बल्कि सेवाभाव के रूप में लिया। अनेक लोगों को

राजनाथ सिंह बने तीसरी बार भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष

–विशेष संवाददाता द्वारा

23 जनवरी 2013. नई दिल्ली स्थित 11 अशोक रोड। भाजपा का केन्द्रीय कार्यालय। सुबह से ही भाजपा कार्यकर्ता बड़ी संख्या में इकट्ठा होने लगे थे। 'भाजपा जिंदाबाद' और 'वंदे मातरम' के नारे से पूरा परिसर गुंजित हो रहा था। अवसर था भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के निर्वाचन का। सुबह साढ़े नौ बजे भाजपा संसदीय बोर्ड की बैठक हुई। बैठक में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर भाजपा के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी द्वारा किए गए अच्छे कार्यों के लिए उनकी प्रशंसा की गई। भाजपा संसदीय बोर्ड की बैठक के बाद श्री राजनाथ सिंह ने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के लिए नामांकन पत्र भरा। किसी और के नामांकन पत्र नहीं भरने पर केन्द्रीय चुनाव अधिकारी श्री थावरचंद गहलोत ने उन्हें निर्विरोध पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने जाने की घोषणा की। और इस तरह श्री राजनाथ सिंह अगले तीन साल के लिए भाजपा के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष चुन लिए गए। विदित हो कि श्री सिंह तीसरी बार भाजपा अध्यक्ष बने हैं। वे इसके पहले 2005 में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। फिर 2006 से 2009 तक इस दायित्व को संभाला। निर्वाचन के पश्चात् भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मुरली मनोहर जोशी एवं श्री वेंकैया नायडू, लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज, राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अनंत कुमार एवं राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) श्री रामलाल ने नए अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह को पुष्पगुच्छ भेंटकर तथा उनका मुंह मीठा कर अभिनंदन किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर श्री राजनाथ सिंह के सर्वसम्मति से चुने जाने की

➡

जोड़ने का सिलसिला जारी रखा। उनके कार्यकाल में अनेक युवा पार्टी से जुड़े। नयी चेतना आई। वे बधाई के पात्र इसलिए भी हैं कि उन्होंने पद से अधिक महत्व प्रतिष्ठा को दिया। और उनका यह नैतिक साहस कहीं न कहीं भारतीय राजनीति में नए आयाम स्थापित करेगा। वहीं इस बात की ओर भी लोग ध्यान देंगे कि जोड़तोड़, गलाकाट, झूठ-फरेब, फर्जीवाड़ा, विकृत राजनीति हरकतों से पद प्राप्त नहीं किया जा सकता अगर व्यक्ति संयम, धैर्य रखें तो पद स्वयं उसकी ओर अपनी गरिमा बनाने के लिए दौड़ी चली आती है।

राजनीति धैर्य, संयम, साहस, परिश्रम, पराक्रम, नैतिकता, प्रामाणिकता, जागरूकता, सतर्कता, समय पर संघर्ष की तत्परता, सेवा की भावना, सत्ता के माध्यम से समाज बदलने की मंशा, राष्ट्रवाद, सुशासन के माध्यम से राजधर्म करने का नाम है। राजनीति गुड्डे-गुड़ियों का खेल नहीं है बल्कि देश को संवारने, सजाने और उसको परम वैभव पर ले जाने का गंभीर मार्ग है। ■

खबर जैसे ही आई, पार्टी मुख्यालय में उत्साह देखने लायक था। भाजपा कार्यकर्ताओं ने जमकर जश्न मनाया। कार्यकर्ताओं ने जोरदार आतिशबाजी की, मिठाइयां बांटीं और ढोल की थाप पर थिरकने लगे। वरिष्ठ भाजपा नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी खुद को यह कहने से रोक नहीं पाए कि जनसंघ में श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चुनाव के समय दिखे लोगों के उत्साह जैसा माहौल दिख रहा है।

मैं सभी अपेक्षाओं पर खरा उतरने की कोशिश करूंगा : राजनाथ सिंह

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने जाने के बाद श्री राजनाथ सिंह ने भविष्य की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए कहा कि वे सभी अपेक्षाओं पर खरा उतरने की कोशिश करेंगे। श्री सिंह ने गृहमंत्री सुशील कुमार शिंदे के संघ और भाजपा को लेकर दिए गए विवादास्पद बयान के खिलाफ देशव्यापी प्रदर्शन के लिए कार्यकर्ताओं का आह्वान किया। संप्रग सरकार पर तीखा हमला करते हुए उन्होंने कहा कि जनता बदलाव चाहती है और भाजपा के नेतृत्व में राजग वह विकल्प देगा। श्री सिंह ने विश्वास जताया कि इस साल कई राज्यों में होने वाले विधानसभा और अगले साल लोकसभा चुनाव में पार्टी विजयी होगी और केन्द्र में भाजपानीत राजग की सरकार बनेगी। श्री नितिन गडकरी की भावनाओं का सम्मान करते हुए उन्होंने कहा कि पार्टी उन्हें दोबारा अध्यक्ष बनाना चाहती थी, लेकिन उन्होंने नैतिक मूल्यों को अहम मानते हुए तय किया कि जांच खत्म होने तक वह पद पर नहीं रहेंगे।

भाजपा 'पार्टी विद ए डिफरेंस' है और इसे बरकरार रखना होगा: आडवाणी

भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि पार्टी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह की सबसे बड़ी जिम्मेदारी यह सुनिश्चित कराने की होगी कि अनैतिक कृत्यों को बर्दाश्त न किया जाए, और भाजपा का आगे का काम एक अलग किस्म की पार्टी बनने का होगा। आडवाणी ने कहा, ''यह उनकी (राजनाथ) विशेष जिम्मेदारी होगी कि अनैतिकता के साथ कोई समझौता न किया जाए। भाजपा का काम यह साबित करना है कि यह एक अलग किस्म की पार्टी है।'' श्री आडवाणी ने श्री राजनाथ सिंह को बधाई देने के साथ ही चुनौतियों की याद भी दिलाते हुए कहा कि भाजपा 'पार्टी विद ए डिफरेंस' है और इसे बरकरार रखना होगा। ''आम चुनाव 2014 में होना है और चुनाव जीतने के लिए लोगों को एकजुट करने की क्षमता जरूरी है, और यह क्षमता उनमें पर्याप्त है।'' श्री आडवाणी ने श्री राजनाथ से यह भी कहा कि उत्तर प्रदेश में पार्टी का खोया जनाधार बढ़ाने के लिए प्रयास किए जाएं। उन्होंने कहा कि राजनाथ जी उत्तर प्रदेश से हैं और हमें उत्तर प्रदेश में अपना खोया जनाधार हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। राजनाथ जी ने कृषि और किसानों से जुड़े मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया है। मुझे भरोसा है कि वह इन सिद्धांतों पर पार्टी को आगे ले जाएंगे।

भाजपा के पास हालात बदलने की क्षमता : नितिन गडकरी

श्री राजनाथ सिंह को भारतीय जनता पार्टी का नया अध्यक्ष बनाए जाने पर उन्हें बधाई देते हुए निवर्तमान अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने कहा कि उनके खिलाफ हुई राजनीतिक साजिश के कारण उन्होंने दोबारा अध्यक्ष न बनने का फैसला किया। श्री गडकरी ने कहा, मैं उन्हें बधाई देता हूं। मैंने उनके नेतृत्व में काम किया है... उनके पास इतनी क्षमता है कि उनके नेतृत्व में हम 2014 का चुनाव जीत सकते हैं। श्री गडकरी ने अपने खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों का जिक्र करते हुए कहा, जहां तक दूसरे कार्यकाल के लिए चुने जाने का सवाल है, एक राजनीतिक साजिश के तहत मेरा नाम एक ऐसे मुद्दे से जोड़ने की कोशिश हुई है, जिससे मेरा संबंध नहीं रहा है। श्री गडकरी ने कहा कि कल भी इसी तरह की एक कोशिश की गई और मैंने महसूस किया कि वे मेरा इस्तेमाल कर मेरी पार्टी को बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं। श्री गडकरी ने कहा कि वह पार्टी हित को खुद से आगे रखना चाहते हैं, इसलिए उन्होंने दूसरा कार्यकाल न सम्भालने का निर्णय लिया। श्री गडकरी ने कहा, मुझे लगा कि पार्टी सबसे आगे रहनी चाहिए। देश की आर्थिक स्थिति खराब है, महंगाई बहुत अधिक है, विदेशी पूंजी भंडार खाली है, और विदेशी निवेश नहीं आ रहा है। ऐसी स्थिति में यदि जनता किसी विकल्प की तलाश में है, तो वह मानती हैं कि भाजपा के पास हालात बदलने की क्षमता है।

भाजपा संसदीय दल की बैठक में पारित प्रस्ताव

नयी दिल्ली में 11, अशोक रोड स्थित भाजपा मुख्यालय में 23 जनवरी 2013 को संसदीय बोर्ड की बैठक हुई। संसदीय बोर्ड ने श्री नितिन गडकरी द्वारा भाजपा अध्यक्ष के रुप में अपने कार्यकाल के दौरान पार्टी को दिये गए नेतृत्व के लिए उनकी सराहना की। श्री गडकरी के जोश, उनके अच्छे कार्यों और उनके खुले विचारों ने पार्टी का आधार तेजी से मजबूत करने में मदद की। श्री गडकरी ने एक आदर्श कार्यकर्ता के गुणों का प्रदर्शन किया और वे हमेशा पार्टी कार्यकर्ताओं के लिए उपलब्ध रहे। ■

श्री राजनाथ सिंह का जीवनवृत्त

बालपन और शिक्षा

श्री राजनाथ सिंह का जन्म 10 जुलाई 1951 को एक किसान परिवार में हुआ। उनका जन्म गांव बमौरा, तहसील चकिया, जिला वाराणसी (अब जिला चन्दौली), उत्तर प्रदेश में हुआ। उनके माता-पिता का नाम है श्री रामबदन सिंह और श्रीमती गुजरती देवी।

उनकी प्राथमिक शिक्षा गांव में हुई और बाद में उन्होंने गोरखपुर विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश से एम. एससी भौतिकी में परीक्षा उत्तीर्ण की। वे के.बी. पोस्ट-ग्रेज्युएट कॉलेज, मिर्जापुर, उत्तर प्रदश में भौतिकी के लेक्चरर रहे।

राजनीतिक जीवन

वे प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे और अपने छात्र जीवन से ही रा.स्व.सं. के कार्यकर्ता थे। वह 1972 में मिर्जापुर शहर के रा.स्व.सं. कार्यवाह (जनरल सेक्रेटरी) थे। वह 1969 से 1971 तक गोरखपुर प्रभाग के अ.भा.वि.प. के संगठन मंत्री रहे।

उन्होंने 1974 में राजनीति में प्रवेश किया और शीघ्र ही वे भारतीय जनसंघ, मिर्जापुर के मंत्री बन गए। 1975 में वह जनसंघ के जिलाध्यक्ष और जे.पी. आंदोलन के जिला-संयोजक बने।

1977 में, वह उत्तर प्रदेश विधानसभा में विधायक के रूप में निर्वाचित हुए।

1983 में, वह उत्तर प्रदेश भाजपा के प्रदेश सचिव बने और 1984 में वह भाजपा की यूथ विंग (भाजयुमो) के प्रदेशाध्यक्ष बने, फिर वे भाजयुमो के राष्ट्रीय महासचिव बने और बाद में 1988 में भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने।

1988 में वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद के एमएलसी निर्वाचित हुए और 1991 में शिक्षा मंत्री पद पर रहे। उत्तर प्रदेश में शिक्षा मंत्री के अपने कार्यकाल में उन्होंने पाठ्यचर्या में नकल-विरोधी अधिनियम और वैदिक गणित जैसे कार्य शुरू कर विशेष प्रशंसनीय कार्य किया तथा साथ ही साथ उन्होंने इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के विभिन्न मांगों में भी संशोधन कराया।

वह 1994 में राज्यसभा के सांसद बने और राज्यसभा में भाजपा के मुख्य सचेतक के रूप में भी कार्य किया।

25 मार्च 1997 को वह उत्तर प्रदेश भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बने। अपने इस कार्यकाल में उन्होंने संगठन का विस्तार और मजबूती प्रदान करने के अलावा उन्होंने राजनैतिक संकट के दौरान दो बार भाजपा-नीत सरकार को बचाने में भी प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया।

22 नवम्बर 1999 को, वह केन्द्रीय भूतल परिवहन मंत्री बने। इस अवधि में उन्हें एनएचडीपी (राष्ट्रीय राजपथ विकास कार्यक्रम) का शुरू करने का मौका मिला, जो श्री अटल बिहारी वाजपेयी का एक ड्रीम प्रोजेक्ट था।

28 अक्तूबर 2000 को, वह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने और वे बाराबंकी में हैदरगढ़ से विधायक के रूप में दो बार निर्वाचित हुए। 2002 में, वह भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव रहे।

24 मई 2003 को, वह केन्द्रीय कृषिमंत्री बने तथा बाद में खाद्य प्रसंस्करण मंत्री बने। इस अवधि में, उन्होंने किसान कॉल सेन्टर और फार्म आय बीमा योजना जैसी कुछ परियोजनाएं शुरू करने का ऐतिहासिक कार्य किया।

भाजपा अध्यक्ष के रूप में उन्होंने पूरे देश का दौरा किया। उन्होंने भारत

सुरक्षा यात्रा की भी शुरूआत कर अनेक राज्यों का दौरा किया जिसमें उन्होंने बढ़ती जा रही आतंकवादी गतिविधियों तथा आंतरिक सुरक्षा के जनहित कार्यों को जनता के सामने रखा। उन्होंने आवश्यक वस्तुओं पर बढ़ती कीमतों, किसानों की शिकायतों और यूपीए सरकार द्वारा प्रमादी अल्पसंख्यकवाद की प्रवृत्ति जैसे जनहित मुद्दों के समाधान पर बल दिया। जब वे भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे तब उन्होंने बेरोजगारी इसके कारण और उपचारों पर एक पुस्तक भी लिखी।

जुलाई 2004 में, उन्हें पुनः भाजपा का राष्ट्रीय महासचिव नियुक्त किया गया। महासचिव के रूप में, वह छत्तीसगढ़ और झारखण्ड राज्यों के प्रभारी रहे तथा अपनी अनुपम संगठनात्मक कुशलता के कारण उन्होंने इन दोनों राज्यों में भाजपा को विजय दिलाई।

वह 31 दिसम्बर 2005 को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने, जिसे उन्होंने दिसम्बर 2009 तक संभाले रखा। वे उत्तर प्रदेश में गाजियाबाद से सांसद निर्वाचित हुए। श्री राजनाथ सिंह जी 23 जनवरी 2013 को पुनः एक और कार्यकाल के लिए भाजपा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। ■

कांग्रेस की सांप्रदायिक राजनीति के खिलाफ सड़कों पर उतरी भाजपा

–संवाददाता द्वारा

गत 23 जनवरी 2013 को भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का दायित्व स्वीकारते ही श्री राजनाथ सिंह ने घोषणा की थी कि कल कांग्रेस नेता और केन्द्रीय गृहमंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे के सांप्रदायिक वक्तव्य के विरोध में पार्टी देश भर में जबदरस्त विरोध-प्रदर्शन का आयोजन करेगी। गौरतलब है कि श्री शिंदे ने जयपुर में कांग्रेस के चिंतन शिविर के दौरान कहा था कि भाजपा हो या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) उनके प्रशिक्षण शिविर हिंदू आतंकवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। इसी क्रम में 24 जनवरी को भाजपा ने दिल्ली सहित सभी राज्यों में प्रदर्शन किया, जिसमें भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया और श्री शिंदे के पुतले फूंके। हम यहां प्राप्त समाचार के अनुसार कुछ राज्यों में हुए विरोध-प्रदर्शन के संक्षिप्त समाचार प्रस्तुत कर रहे हैं :

दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी ने स्पष्ट रूप से कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा के शिविरों में हिंदू आतंकवादी तैयार किये जाने का आरोप लगानेवाले केंद्रीय गृह मंत्री सुशील कुमार शिंदे के मंत्री रहते संसद का आगामी बजट सत्र सुचारू रूप से नहीं चल पायेगा। कांग्रेस के जयपुर चिंतन शिविर में शिंदे द्वारा लगाये गये इस आरोप के विरोध में 24 जनवरी 2013 को राष्ट्रव्यापी विरोध प्रदर्शनों के दौरान नई दिल्ली में भाजपा ने यह घोषणा की। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी से श्री शिंदे के आरोप के लिए माफी मांगने की मांग करते हुए भाजपा नेताओं ने कहा कि वे दोनों वोट बैंक राजनीति के चलते मौन हैं।

जंतर-मंतर पर आयोजित इस प्रदर्शन में बड़ी संख्या में जुटे भाजपा कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए भाजपा के नये राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने घोषणा की कि अगर शिंदे को केंद्रीय मंत्रिमंडल से नहीं हटाया गया तो पार्टी संसद के बजट सत्र में दोनों सदनों में उनको हटाने की मांग जारी रखेगी और संसद सुचारू रूप से नहीं चल पायेगी। उन्होंने कहा कि शिंदे की टिप्पणी से दुनियाभर में भारत की छवि खराब हुई है, इसके बावजूद सोनिया गांधी शायद वोट बैंक राजनीति की चिंता में मौन हैं, पर शिंदे को तो जाना ही होगा, कोई शक्ति उन्हें नहीं बचा सकती। भाजपा अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि कांग्रेस आतंकवाद से लडने और उसके अभिशाप से देश को मुक्ति दिलाने के प्रति गंभीर नहीं है, इसीलिए उसके नेता कभी ओसामा बिन लादेन को ओसामा जी कहते हैं तो कभी हाफिज सईद को सईद साहब।

लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि शिंदे को अपने शब्द वापस ले कर माफी मांगनी चाहिए। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को भी माफी मांगनी चाहिए तथा शिंदे को मंत्रिमंडल से बर्खास्त किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत विरोधी आतंकी शिविर चलानेवाले पाकिस्तान के बजाय शिंदे उलटे देश के मुख्य विपक्षी दल को ही निशाना बना रहे हैं।

उत्तर प्रदेश

भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को हिंदू आतंकवाद से जोड़ने सम्बंधी केंद्रीय गृहमंत्री के विवादित बयान को लेकर भाजपा ने पूरे राज्य में कई जगहों पर प्रदर्शन किया। भाजपा कार्यकर्ताओं ने गृहमंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे द्वारा दिए गए बयान के विरोध में वाराणसी, लखनऊ, मेरठ,

कानपुर और इलाहाबाद में कई जगहों पर रैलियां निकालकर विरोध दर्ज कराया।

राज्य में कई जगहों पर भाजपा

कार्यकर्ताओं ने शिंदे का पुतला फूंका और उनके खिलाफ नारेबाजी की। राजधानी में जहां विधानसभा मार्ग और महानगर में भाजपा कार्यर्ताओं ने प्रदर्शन किया वहीं वाराणसी में सिगरा चौराहे से लंका तक जूलुस निकालकर अपना विरोध दर्ज कराया। इसी प्रकार इलाहाबाद में सिविल लाइंस में भाजपा कार्यकर्ताओं ने शिंदे का पुतला फूंका और केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

मध्य प्रदेश

केन्द्रीय गृहमंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे के बयान के विरोध में भाजपा सड़कों पर उतर आई। भोपाल स्थित पीरगेट चौराहे पर प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर के नेतृत्व में धरना दिया गया। इस अवसर पर सभी वक्ताओं ने केन्द्रीय गृहमंत्री को बर्खास्त करने की मांग की और पुतला भी फूंका। श्री तोमर ने इस अवसर पर कहा कि केन्द्र सरकार आतंकवाद से निपटने में नाकाम है।

इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री बलबीर पुंज ने कहा कि इस बार बजट सत्र में भाजपा सांसद भगवा वस्त्र और पट्टी पहनकर प्रदर्शन करें। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान भारत के प्रति पूर्वाग्रह रखता है और केन्द्रीय मंत्री भी उसका साथ दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के महासचिव दिग्विजय सिंह ओसामा और हफीज के लिए सम्मानजनक शब्द का इस्तेमाल करते हैं दूसरी ओर स्वामी रामदेव को ठग कहने से नहीं चूकते। केन्द्रीय गृह मंत्री को बर्खास्त करने की मांग को लेकर प्रदेश के सभी संगठनात्मक 55 जिलों में भाजपा ने प्रदर्शन किया। इंदौर में सांसद श्रीमती सुमित्रा महाजन सहित सभी नेता धरने पर बैठे। जबलपुर के मालवीय चौक पर सांसद श्री राकेश सिंह के नेतृत्व में धरना दिया गया। रीवा में जिला अध्यक्ष श्री जनार्दन मिश्रा के नेतृत्व में धरना दिया गया।

बिहार

केन्द्रीय गृह मंत्री के बयान के विरोध में आरा, सासाराम, गया, मुजफ्फरपुर, सहरसा सहित पूरे राज्य में भाजपा कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया। पटना में बिहार भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री मंगल पांडेय ने कहा कि सुशील कुमार शिंदे ने इस तरह का घिनौना बयान आतंकियों को खुश करने के लिए दिया है। कांग्रेस पार्टी खुद को बयान से अलग नहीं कर सकती। अगर पार्टी को उनके बयान से अलग रखना है तो शिंदे को पार्टी से बाहर का रास्ता दिखाना होगा। श्री पांडेय ने कहा कि भगवा शब्द इस देश की पहचान और संस्कृति है। इसके विरोध में बोलने वाले को देश की जनता कतई स्वीकार नहीं कर सकती। शिंदे को अपना बयान वापस लेना चाहिए, नहीं तो प्रधानमंत्री को उन्हें हटा देना चाहिए। वे पटना के कारगिल चौक पर आयोजित एक दिवसीय धरना को संबोधित कर रहे थे।

झारखंड

केंद्रीय गृह मंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे के बयान से भाजपा के कार्यकर्ताओं में खासा आक्रोश दिखा। भाजपा कार्यकर्ताओं ने रांची स्थित अल्बर्ट एक्का चौक पर श्री शिंदे का पुतला फूंक गुस्से का इजहार किया। महानगर भाजपा अध्यक्ष श्री सत्यनारायण सिंह ने कहा कि केंद्रीय गृह मंत्री सुशील कुमार शिंदे का यह बयान कि भाजपा और आरएसएस के शिविरों में हिन्दू आतंकवाद की ट्रेनिंग दी जाती है, बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है। यह शिंदे के मानसिक दिवालियापन को दर्शाता है। भारत के 100 करोड़ की आबादी में हिन्दू समुदाय के लोग रहते

हैं। यह भारतवासियों का अपमान है। श्री सिंह ने कहा कि आतंकवादी किसी जाति धर्म या जात के नहीं होते, बल्कि वे समाज दुश्मन होते हैं। ऐसे में किसी राष्ट्रीय पार्टी, संस्था या उसके समर्थक को आतंकवाद की संज्ञा देना राष्ट्र का अपमान है। बड़े जिम्मेदार पद पर रहते हुए गृह मंत्री का बयान देना अपराध है। उन्हें पद पर बने रहने का कोई अधिकार नहीं है। नैतिकता के आधार पर उन्हें अविलंब पद से इस्तीफा दे देना चाहिए।

राजस्थान

केन्द्रीय गृहमंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे के संघ और भाजपा के खिलाफ

दिए गए आपत्तिजनक बयान के विरोध में पूरे प्रदेश में विरोध-प्रदर्शन किया। इस दौरान कई जगह श्री शिंदे के पुतले भी फूंके गए और उनके खिलाफ कई जगह थानों में लिखित रिपोर्ट पेश कर मुकदमा दर्ज करने की मांग भी की गई। राजधानी जयपुर में छोटी चौपड़ पर प्रदेश भाजपा की ओर से धरना दिया गया। इसमें पार्टी के सभी नेता, पदाधिकारी और कार्यकर्ता शामिल हुए। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री अरुण चतुर्वेदी ने बताया कि गृहमंत्री सुशील कुमार शिंदे ने भाजपा और संघ पर हिंदू आतंकवादी तैयार करने का घिनौना आरोप लगाया है। पूरे देश में इसकी निंदा हो रही है। इस बयान के खिलाफ भाजपा कार्यकर्ताओं ने उपवास रखे और धरने पर बैठे।

हिमाचल प्रदेश

भारतीय जनता पार्टी ने गृह मंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे की बयानबाजी के विरोध में जगह-जगह उनके पुतले फूंके और नारेबाजी की।

भाजपा के देशव्यापी आंदोलन के तहत सोलन में पूर्व मुख्यमंत्री श्री प्रेम कुमार धूमल व भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष श्री सतपाल सत्ती के नेतृत्व में माल रोड पर विरोध रैली निकाली गई। इसमें पार्टी के राज्यस्तरीय पदाधिकारियों ने

स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ विश्राम गृह से माल रोड होते हुए उपायुक्त कार्यालय चौक तक जलूस निकाला। इसमें गृहमंत्री के साथ केंद्र सरकार व कांग्रेस के खिलाफ खूब नारे लगाए गए और प्रदर्शनकारी हाथों में नारे लिखी तख्तियां व पुतले की अर्थी उठाए हुए थे।

उपायुक्त चौक पर भाजपा ने पुतले को आग के हवाले किया और गृहमंत्री के बयान को लेकर उनके इस्तीफे की मांग की। इस मौके पर श्री धूमल सहित श्री सत्ती व श्री वीरेंद्र कश्यप ने प्रदर्शनकारियों को संबोधित भी किया। भाजपा नेताओं ने कहा कि कांग्रेस देश को बांटने का ही कार्य करती है और देश की मूल समस्याओं से लोगों को ध्यान भटकाने के लिए ऐसी गैर जिम्मेदाराना व सनसनी फैलानी बयानबाजी करती है।

छत्तीसगढ़

कांग्रेस के राष्ट्रीय चिंतन शिविर में देश के गृहमंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे द्वारा कही गई भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा हिन्दू आतंकवाद को प्रशिक्षण दे रहे है इस पर भाजपा जिला एवं सभी 16 मण्डलों के कार्यकर्ताओं ने चौक-चौराहों पर श्री शिंदे का पुतला दहन कर अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष श्री अशोक पाण्डेय ने गृहमंत्री के कथन पर आपत्ति व्यक्त करते हुए कहा कि गृहमंत्री द्वारा इस तरह की अमर्यादित बात कहना देश के सामाजिक एकता एवं आपसी सौहार्द और शांति को भंग करने से कम नहीं है। उन्होंने हिन्दूत्व के मर्यादाओं के साथ खिलवाड़ करने का दुस्साहस किया है। आज देश राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा के राष्ट्रभक्त नेताओं के कारण ही सुरक्षित है और कांग्रेस पार्टी द्वारा इन्हें बदनाम करने की सोची समझी रणनीति के तहत ऐसा किया जा रहा है। जिसकी भारतीय जनता पार्टी घोर निंदा करती है।

पंजाब

भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव श्री

जगत प्रकाश नड्डा ने कहा कि केंद्रीय गृह मंत्री का बयान देश की एकता व अखंडता के लिए घातक है। शिंदे को जान लेना चाहिए कि बहुसंख्यक हिंदू समाज के कारण ही देश में सर्व धर्म सद्भाव है।

श्री नड्डा भंडारी ब्रिज में स्थित दीनदयाल उपाध्याय मार्केट के बाहर भाजपा द्वारा केंद्रीय गृह मंत्री सुशील कुमार शिंदे के विरुद्ध लगाए गए धरने के अवसर पर संबोधित कर रहे थे।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री कमल शर्मा ने कहा कि देशद्रोही शक्तियां राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को देश का दुश्मन मानती हैं। देशभक्त जानते हैं कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने देश विभाजन, भारत-पाकिस्तान के बीच लड़े गए तीन युद्ध, आपातकालीन के दौरान लोगों के मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष किया। देश की एकता व अखंडता के लिए बलिदान दिया। पंजाब में आतंकवाद के काले दौर के दौरान मोगा में 28 स्वयं सेवक संघों की शहादत देकर पंजाब व पंजाबियत की रक्षा की। ■

गरीबी नहीं, गरीबों को खत्म करने पर आमादा कांग्रेस सरकार : नितिन गडकरी

गत 20 जनवरी 2013 को छतरपुर, नई दिल्ली में दिल्ली प्रदेश भाजपा द्वारा आयोजित जनाक्रोश रैली में भाजपा के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी के भाषण का संपादित पाठ :-

भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता के नाते हमारी पार्टी और हमारे सब कार्यकर्ता देश के लिए समर्पित हैं। अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जो विचार हमको दिया है। वो विचार यह नहीं है कि देश का

प्रधानमंत्री कौन बनेगा? इसकी हमको चिंता नहीं है हमको चिंता है अटल बिहारी वाजपेयी जी के शब्दों में कि ये देश कैसा होगा? इस बात की हमको चिंता है। अटल बिहारी वाजपेयी जी ने एनडीए के कार्यकाल में हमारे देश को जो दिशा दी उसका अनुभव सबने किया है। उस समय महंगाई कैसी थी? पेट्रोलियम के भाव कितने थे? रोजमर्रा की चीजों के भाव कितने थे? और आज सोनिया जी और मनमोहन सिंह जी और शीला जी के नेतृत्व में पेट्रोल-डीजल और गैस के भाव कितने हैं, रोजमर्रा के चीजों के भाव कितने हैं, आप जांच सकते हैं। यही कांग्रेस वाले नारा दोहरा रहे थे कि 'सोनिया जी आई है- नई रोशनी लाई है।' नई तो आई नहीं, जो थी वो भी चली गई। यही सोनिया जी और कांग्रेस वाले, यूपीए वाले, झुग्गी-झोंपड़ी में रहने वालों को एलान कर रहे थे कि हमारे हाथ में सत्ता की चाबी दे दो हम सौ दिनों के अंदर महंगाई कम करके दिखाएंगे। ये वचन कांग्रेस पार्टी ने और सोनिया गांधी ने इस देश के गांव-गरीब-मजदूर-किसान, हिन्दू, मुसलमान, दलित जनता को दिया था। क्या हुआ उस वचन का? हुई मंहगाई कम? पर सोनिया जी ने और कांग्रेस ने एक बहुत बड़ा फार्मूला निकाला। गरीबी कम नहीं हो रही है तो गरीबों को बर्बाद कर दो, इतनी महंगाई बढ़ा दो कि किसान आत्महत्या करेंगे। प्रधानमंत्री, सोनिया जी और कांग्रेस भी सरकार कहती है कि दिल्ली जैसे शहर में जिस गरीब की रोज की आमदनी 32 रुपए से ज्यादा है यानी 33 रुपए प्रतिदिन है वो व्यक्ति धनवान है। है कोई कांग्रेस नेता? सोनिया जी और मनमोहन सिंह जी से जाकर पूछो कि 33 रुपए प्रतिदिन कमाई करने के बाद दिल्ली जैसे महानगर में, हम धनवान कैसे जी सकते हैं जरा हमारा मार्गदर्शन करिए, हमको बताइए।

कांग्रेस पार्टी ने जाति-पांति और धर्म की राजनीति की। देश के किसान आत्महत्या कर रहे हैं। उद्योग बंद पड़े हैं। बेरोजगारों की संख्या बढ़ रही है। देश में नई इंडस्ट्री शुरू नहीं हो रही है। और अटलजी के कार्यकाल में जो विदेशी मुद्रा भरा हुआ था उसको इन्होंने दीवाला पीटकर खाली कर दिया है। आज गरीब आदमी का जीना मुश्किल हुआ है। हमारे विजन डॉक्यूमेंट में हमने लिखा है कि दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी की सत्ता लाओ-हम झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले 5 लाख किसानों को गरीबों को, दलित-मजदूरों को जो झुग्गी झोंपड़ी में रह रहे हैं उनको मकान बनाकर देंगे और उनको शून्य प्रतिशत ब्याज पर बैंक से ऋण दिलाकर अच्छे मकान दिलाएंगे।

हमारी पार्टी है कि जिसने कर्नाटक में शून्य प्रतिशत ब्याज

पर किसानों को ऋण देने की शुरूआत की। किसानों को बिजली मुफ्त में मिल रही है हमारी भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। मध्यप्रदेश में हमारी सरकार किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज पर कर्ज दे रही है। हमारी छत्तीसगढ़ की सरकार है जो 1 प्रतिशत ब्याज पर किसानों को कर्ज दे रही है। किसान आत्महत्या कर रहा है। कांग्रेस के राज्य में, हरियाणा में किसानों की जमीन हड़पकर कांग्रेस पार्टी के नेताओं के करोड़ों रुपए कमाने का काम किया। बिल्डर-डेवलेपर के साथ सांठगांठ की। कांग्रेस के नेता करोड़ों रुपए कमा रहे हैं पर दिल्ली की सीमाओं पर गरीबों के लिए मकान बनाने के लिए कोई योजना लाकर गरीबों के कल्याण की बात नहीं हो रही है। सोनिया जी को चिंता गरीबों की नहीं है। उनको चिंता राहुल बाबा की है। वढेरा की है अपने परिवार की है।

ये जो जयपुर में कांग्रेस का शिविर है, ये चिंतन शिविर नहीं है ये चिंता शिविर है। इस बात की चिंता हो रही है कि देश के बेरोजगारों को रोजगार कैसे मिलेगा? देश के गरीबों को महंगाई कम करके राहत कैसे मिले? दिल्ली जैसे शहरों में मां-बहनों की इज्जत लूटी जा रही है। उन मां बहनों की रक्षा कैसे हो? जो शूर-जवान सीमा पर लड़ाई लड़ रहे हैं जिनकी गर्दन काटी जा रही है, जिनको अपमानित किया जा रहा है और हमारे सैनिकों का गौरव कैसे बढ़ाया जाय, इसकी चिंता नहीं है। आतंकवादी आकर निरपराध लोगों की हत्याएं कर रहे हैं। हमारी संसद में आकर हमारे शूर-जवानों के, पुलिसवालों की हत्याएं हो गईं, उन्होंने अपने जान की कुर्बानी देकर हमारी लोकतंत्र के मंदिर संसद को बचाया, उनको चिंता इस बात की नहीं है कि अफजल गुरु की फांसी को कैसे रोका जाए? उनको चिंता ये नहीं है कि हमारे सैनिकों की गर्दन काटी गई, उसके लिए पाकिस्तान के साथ कड़ाई से, कठोरता से पेश होना चाहिए, इसके बजाय ये कांग्रेस की सरकार ने घुटने टेक दिए। बाटला हाऊस में पुलिस अफसर शर्मा ने अपनी कुर्बानी देकर आतंकवादियों के साथ लड़ते हुए शहीद हुए, इसकी चिंता इन कांग्रेस नेताओं को नेता नहीं है। आतंकवाद का तुष्टिकरण कैसे किया जाए, इसकी चिंता है। कहां जाएगा देश?

क्या ऐसे ही देश को खोखला करते रहेंगे कांग्रेस वाले और हम देखते रहेंगे? आतंकवादी आते रहेंगे और निर्दोषों को मारते रहेंगे। गुण्डे-लोफर लोग आते रहेंगे, मां-बहनों की इज्जत लूटते रहेंगे। एफडीआई रिटेल में आएगा और चाय-पटरी पर बैठने वाले और ठेलेवाले गरीबों के हाथ और छोटी दुकानें खत्म हो जाएंगी। क्या बेचारे गरीब बर्बाद होते रहेंगे क्या हम देखते रहेंगे? और ऊपर से हमारे गृहमंत्री जयपुर में कह रहे हैं। इस कांग्रेस सरकार की हिम्मत नहीं है कि जिस पाकिस्तान ने हमारे दो सैनिकों के सिर काट दिए उस पाकिस्तान को करारा जवाब देने की हिम्मत इस सरकार में नहीं है। जिस अफजल गुरु को सुप्रीम कोर्ट ने फांसी की सजा दी जिसने पार्लियामेंट को ध्वस्त करने का षड्यंत्र किया, उसको फांसी की सजा देने की हिम्मत इस सरकार के पास नहीं है। बाटला हाउस में जो हमारे पुलिस इंस्पेक्टर शर्मा शहीद हुए उसके घर में सांत्वना देने के लिए बड़ा दिल इनके पास नहीं है पर आतंकवादियों का तुष्टिकरण करने वाली सरकार के गृहमंत्री कहते हैं कि इस देश में आरएसएस और बीजेपी अपने कैम्प के द्वारा हिन्दू कट्टरवाद का प्रशिक्षण देने का काम कर रहे हैं, ऐसी जानकारी हमको मिली हैं, वाह रे सुशील कुमार शिंदे! मरने वाले मरते रहें और कांग्रेस वाले बोलते रहें।

देश को जगाइए। जनता को सच्चाई का बताइए। हिन्दू-मुसलमान, दलित सबको साथ में लेकर सबके भविष्य को बनाने के लिए उज्ज्वल हिन्दुस्तान को बनाना यही भारतीय जनता पार्टी का विचार है। आखिर में छोटे से पांच मुद्दे जो भारतीय जनता पार्टी के तत्व बताकर अपने भाषण को समाप्त करता हूं।

राष्ट्रवाद- इस देश के साथ राष्ट्रवाद हमारे अंग-अंग में भरा हुआ है। वो हमारी आस्था है। हमारी प्रेरणा है।

गुड गवर्नेंस- गुड गवर्नेंस विद दि हेल्प ऑफ ई-गवर्नेंस। ई-गवर्नेंस का इस्तेमाल करके सुशासन और विकास ये भारतीय जनता पार्टी का मिशन है।

अन्त्योदय- जो समाज का आखिर व्यक्ति है जो शोषित है पीड़ित है दलित है। जिसके पास रहने के लिए मकान नहीं है। जिसके पास खाने के लिए रोटी नहीं है। जिसके शरीर पर कपड़ा नहीं है। उस दरिद्रनारायण को हम भगवान मानें। और उस दिन तक हम काम करते रहें कि जिस दिन तक उस व्यक्ति को रोटी, कपड़ा और मकान नहीं मिलेगा उस दिन तक हमारा कार्य पूर्ण नहीं होगा। ऐसा समझकर हम चलेंगे। ये पं. दीनदयाल जी का अन्त्योदय का विचार यही हमारा उद्देश्य है। और उस गरीब के कल्याण के लिए हम काम कर रहे हैं।

सदभाव- सोशल हार्मनी। जात, पांत, धर्म, भाषा लिंग इसका विचार न करते हुए सब समाज के साथ। सब धर्म के साथ। सब भाषा बोलने वालों के साथ न्याय होगा। सबको बराबरी का विकास का मौका मिलेगा। सामाजिक न्याय और आर्थिक न्याय होगा। ऐसे सामाजिक सद्भाव का सोशल हार्मनी का विचार यह भारतीय जनता पार्टी की आत्मा है।■

इन दिनों मुझे हार्वर्ड की विद्वान डायना एल एक्क की एक उत्कृष्ट पुस्तक पढ़ने को मिली। पुस्तक का शीर्षक है: 'इण्डिया: ए सेक्रिड जियोग्राफी'।

कुछ इतिहासकार कहते हैं कि भारतीयों में इतिहास बोध की कमी है। पुस्तक के अध्याय 2 में "व्हाट इज इण्डिया?'' शीर्षक वाले अध्याय में लेखक, अनेकानेक शोधों पर आधारित पुस्तक में इस टिप्पणी का संदर्भ देते हैं लेकिन यह भी स्वीकारोक्ति करते हैं कि यद्यपि "यह पाकर अनूठा लगा कि उनके (भारतीयों) पास भूगोल का विस्तृत ज्ञान है।" डायना आगे लिखती हैं:

"उस समय जब इस भूमि की लम्बाई और चौड़ाई में घूमना अवश्य ही बहुत कठिन रहा होगा, तब भी भौगोलिक ज्ञान की परम्पराएं दर्शाती हैं कि ऐसी यात्रा वस्तुत: की जाती थीं। और यह भी उल्लेखनीय है कि उस समय जब इस उपमहाद्वीप में कोई राजनीतिक एकता नहीं थी तब भी जो इस क्षेत्र को सिकन्दर के साथ जोड़ते थे और इसे एक एकल भूमि... निरुपित करते थे...

वे भी सत्यापित करते हैं कि पश्चिमी सीमा पर सिंधु नदी, हिमाचल और उत्तर तक फैला हिन्दुकुश, और अन्य दोनों दिशाओं में विस्तारित समुद्र के साथ भारत आकार में चतुर्भुजीय था। यहां तक कि उन्होंने इस माप को भी उद्धृत किया है: सिंधु नदी की लम्बाई सिंधु से पाटलिपुत्र की दूरी और वहां से गंगा मुख्य पूर्वी और पश्चिमी तटों से इसकी दूरी के साथ।

ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के निदेशक बने एलेक्झेंडर कन्नींघम ने 1871 में लिखा:

"इन आयामों का सुगठित प्रबन्धन जोकि सिकन्दर के गुप्तचरों ने दिया था, विशेषकर देश के वास्तविक आकार के साथ अपने आप में उल्लेखनीय है, यहां तक कि उनके इतिहास के प्रारम्भिक काल में उन्हें अपनी मातृभूमि के रूपों और विस्तार का सही-सही ज्ञान था।"

जब देश पर अंग्रेजों का शासन था तब तथाकथित विद्वानों का एक वर्ग इसे प्रोत्साहित करने का इच्छुक था कि ब्रिटिश शासन इस विचार के प्रति घृणा करता है कि भारत एक देश था और भारतीय एक जन थे।

इस वर्ग का एक प्रमुख प्रतिनिधि था ब्रिटिश सिविल अधिकारी, सर जॉन स्ट्राचे। सन् 1888 में कैंम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में बोलते हुए सर स्ट्राचे ने कहा "भारत नाम का क्या महत्व है? अनेक बार यह उत्तर दिया जाता रहा जोकि असत्य सा है,'' मगर यह भी सत्य है, उन्होंने कहा "ऐसा कोई देश नहीं है, और यह भारत के बारे में पहला तथा सर्वाधिक जरुरी तथ्य समझ लेना चाहिए। भारत एक नाम है जिसे हम ने अनेक विभिन्न देशों सहित एक बड़े क्षेत्र का नाम दिया है।''

सर जॉन स्ट्राचे तर्क देते थे कि भारत की तुलना में यूरोप में ज्यादा समान संस्कृति है। "स्कॉटलैण्ड स्पेन की तरह ज्यादा है बनिस्पत बंगाल के पंजाब की तरह की तुलना में... सभ्य यूरोप में ऐसा कोई देश नहीं है जहां लोग भिन्न हों जैसे कि बंगाली सिखों से भिन्न है, और बंगाल की भाषा लाहौर में उतनी ही अबोधगम्य है जितनी कि यह लंदन में होगी।"

इस पुस्तक की लेखक डायना एक्क हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में कम्पैरेटिव रिलीजन एण्ड इण्डियन स्टडीज की प्रोफेसर हैं। उनकी पुस्तक 'बनारस, सिटी ऑफ लाइट' अपने विषय की उत्कृष्ट पुस्तक मानी जाती है, तो 559 पृष्ठों की कड़ी मेहनत से तैयार यह ग्रंथ बताता है कि कैसे हिन्दू पौराणिकता भारत के भूगोल से गुथी है और इस ब्रिटिश शासन के सिद्धांत कि भारत एक देश नहीं है और भारतीय एकजन नहीं हैं, को सशक्त और समाधानपूर्वक ठुकराती है।

पुस्तक में अहमदनगर किले का स्मरण किया गया है जहां पण्डित नेहरु ने अपने कारावास के दौरान अपनी

पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' लिखी थी। अपनी इस पुस्तक में वह लिखते हैं कि स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान देश भर की उनकी यात्रा ने उन्हें देश की एकता के बारे में धारणा को पुष्ट किया। नेहरु लिखते हैं:

यद्यपि बाह्य रूप से हमारे लोगों के बीच विभिन्नता और बेहद विविधता थी, तब भी सर्वत्र 'एकात्मता' का प्रबल भाव था जिसने भले ही हमारा राजनीतिक भाग्य हो या दुर्भाग्य रहा हो, युगों से हम सब को बांधे रखा है, भारत की एकता मेरे लिए मात्र एक बौद्धिक धारणा नहीं रही: यह एक भावनात्मक अनुभव था जिसने मुझे पूर्णतया हावी हुआ।''

डायना लिखती हैं: "नेहरु के भारत के विजन में निश्चित रुप से सभी जातियों और क्षेत्रीय समुदायों सहित इसकी मजहबी विविधता समाहित थी। सन् 1930 के दशक में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में अपने नेतृत्व के उदय से लेकर अपनी मृत्यु तक भारत के पहले प्रधानमंत्री के रुप में उन्होंने एक कट्टर सेकुलरिज्म का पक्ष लिया, यह सेकुलरिज्म गहरे, हिन्दू आधारों पर निर्मित था, जिनका वर्णन हम कर रहे हैं।''

भाजपा और राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ भारतीय राष्ट्रवाद का आधार हमारी संस्कृति को ही मानते हैं। अक्टूबर 1961 में जब मदुरै में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का सम्मेलन हुआ तब पण्डित नेहरु ने टिप्पणी की थी कि भारत "युगों-युगों से तीर्थ-यात्राओं, तीर्थ स्थानों का देश रहा है।'' "उन्होंने आगे लिखा "समूचे देश में आपको प्राचीन स्थान मिलेंगे। हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों पर बदरीनाथ, केदारनाथ तथा अमरनाथ से दक्षिण में कन्याकुमारी तक आपको तीर्थस्थल मिल जाएंगे। दक्षिण से उत्तर तक तथा उत्तर से दक्षिण तक कौन सी प्रेरणा-शक्ति लोगों को इन महान तीर्थस्थलों की ओर आकर्षित करती आ रही है? यह एक राष्ट्र की भावना तथा एक संस्कृति की भावना है और इस भावना से हम परस्पर बंधे हुए हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में कहा गया है कि भारत भूमि उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में समुद्र तक फैली है। सदियों से भारत की यह संकल्पना चली आ रही है तथा इसने हमें परस्पर बांध रखा है। इस महान धारणा से प्रभावित होकर लोगों ने इसे 'पुण्यभूमि' माना है। जबकि हमारे यहां अनेक साम्राज्य हुए हैं तथा यहां हमारी विभिन्न भाषाएं प्रचलित रही हैं। यह कोमल बंधन ही हमें अनेक तरीकों से बांधे रखता है।

पण्डित नेहरु का मदुरै भाषण भारत की प्राचीनता परन्तु सतत् स्वउर्जित संस्कृति को उस 'कोमल बंधन' वर्णित करता है जो हमारी विविधताओं को 'एक देश' के रुप में जोड़ता है।

♦♦♦

उमाश्री भारती की उनके 'गंगा समग्र अभियान' के पहले चरण के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर हार्दिक अभिनन्दन, जिसके तत्वाधान में गत् 7 जनवरी, 2013 को कांस्टीट्यूशन क्लब में एक औपचारिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इस अभियान के दो हिस्से थे: एक, 20 सितम्बर, 2012 से 28 अक्टूबर, 2012 तक गंगासागर से गंगोत्री तक की पांच सप्ताह की यात्रा और दूसरा, 2 दिसम्बर, 2012 को गंगा के सभी किनारों पर एक मानव श्रृंखला बनाना।

साध्वी उमा भारती के अभियान के दो उद्देश्य थे। (1) शुद्ध गंगा, (2) अविरल गंगा।

श्रोताओं से खचाखच भरे इस कार्यक्रम में भारतीजी ने इस अभियान में समाज के सभी समुदायों और वर्गों के उत्साह भरे समर्थन का प्रभावी ब्यौरा प्रस्तुत किया।

विट्ठलभाई पटेल हाउस में सम्पन्न इस कार्यक्रम में, मेरी सुपुत्री प्रतिभा द्वारा तैयार की गई तीस मिनट की अत्यन्त दिलचस्प और शिक्षाप्रद फिल्म 'गंगा' दिखाई गई।

♦♦♦

सेक्रिड जियोग्राफी पुस्तक में "दि गंगा एण्ड दि रिवर्स ऑफ इण्डिया' शीर्षक से एक अलग अध्याय है।

इस अध्याय में डायना कहती हैं: हिन्दू भारत अपनी विविधताओं के बावजूद कुछ चीजों पर एक स्वर से बोलता है जैसाकि गंगा माता के बारे में। यह नदी हिन्दुओं, चाहे वे उपमहाद्वीप के किसी भी भाग को अपना घर कहते हों, या चाहे उनका अपना कोई सम्प्रदाय हो, के लिए विशाल सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व रखती है। जैसाकि एक हिन्दी लेखक ने लिखा है, "यहां तक कि कट्टर नास्तिक हिन्दू भी जब गंगा के तट पर पहली बार पहुंचेंगे तो उसके मन में ऐसे भाव उमड़ेंगे जो पहले कभी नहीं उमड़े थेय "या, हम इसमें जोड़ सकते हैं, 'जब गंगा उनके पास पहुंची।' विभिन्न क्षेत्रों और बहुविध हिन्दू परम्पराओं के लोगों में एकता भाव लाने के लिए गंगाजल का उपयोग पूर्णतया अनुकूल होना चाहिए। आखिरकार, यह प्रतीक है सिर्फ उपकार, सिर्फ भरे हुए जल कलश और कमल का।

उमाश्री के अभियान के स्वयंसेवक गंगाजल के कलशों को लेकर सभी सांसदों, विधायकों और हजारों जनप्रतिनिधियों को देने गए थे, स्वयं उमाजी, राष्ट्रपति, सम्मानीय लोकसभाध्यक्ष और अनेक अन्य गणमान्य महत्वपूर्ण व्यक्ति गंगाजल देने गए।

इस गंगाजल भेंट कार्यक्रम में हिस्सा ले चुके सभी इस पर एकमत थे कि जिस श्रद्धा से यह कलश ग्रहण किए गए वह न केवल हिन्दुओं तक सीमित थे अपितु हिन्दुओं, मुस्लिमों, ईसाइयों, सिखों में भी देखने को मिली। ■

'सलाह मशविरा' शब्द के दो अलग-अलग अर्थ

✍ अरुण जेटली

उच्चतम न्यायालय ने 11 जनवरी 2013 को कर्नाटक उप लोकायुक्त मामले में फैसला सुनाया। मैंने गुजरात में लोकायुक्त की नियुक्ति के मामले में 2 जनवरी 2013 को दिये गए उच्चतम न्यायालय के एक अन्य फैसले पर 3 जनवरी 2013 को विस्तार से टिप्पणी की थी। मैंने नौ दिन के अंतराल पर दिये गए दोनों फैसलों को कई-कई बार पढ़ा।

कर्नाटक अधिनियम के प्रावधानों की व्याख्या अनिवार्य रुप से इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि कर्नाटक में जिस व्यक्ति की नियुक्ति उप लोकायुक्त के रुप में की जानी है, वह उच्च न्यायालय का न्यायाधीश रह चुका हो, और मुख्यमंत्री की सलाह पर राज्यपाल द्वारा उसकी नियुक्ति की जाए। सलाह देने से पहले मुख्यमंत्री उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और कर्नाटक विधान परिषद के अध्यक्ष, विधानसभा स्पीकर, कर्नाटक विधान परिषद में विपक्ष के नेता और कर्नाटक विधानसभा में विपक्ष के नेता से सलाह अवश्य करें।

दोनों मामलों में उच्चतम न्यायालय ने जिन सिद्धांतों की बात कही है वह महत्वपूर्ण तरीके से अलग-अलग लगते हैं; और गुजरात में लोकायुक्त की नियुक्ति के बारे में मुख्य न्यायाधीश द्वारा दी गई राय की श्रेष्ठता के संबंध में कई लोगों के मन में संदेह पैदा करते हैं।

प्रावधान

कर्नाटक अधिनियम की धारा 3 लोकायुक्त और उप लोकायुक्त की नियुक्ति से संबद्ध है। उपर्युक्त अधिनियम की धारा 3 (2) (बी) कहती है:

''(बी) उप लोकायुक्त के रुप में नियुक्त होने वाला व्यक्ति ऐसा होना चाहिए जो उच्च न्यायालय का न्यायाधीश रह चुका हो और उसकी नियुक्ति कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश, कर्नाटक विधान परिषद के अध्यक्ष, कर्नाटक विधानसभा के स्पीकर, कर्नाटक विधान परिषद में विपक्ष के नेता और कर्नाटक विधानसभा में विपक्ष के नेता के साथ मंत्रणा करके मुख्यमंत्री की सलाह से की गई हो।

गुजरात अधिनियम में शामिल प्रावधान (अनुच्छेद 3) में कहा गया है:

''इस अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार जांच-पड़ताल करने के उद्देश्य से, राज्यपाल, अपने हस्ताक्षरों और मुहर से अधिकार देकर किसी व्यक्ति को नियुक्त करेगा जो लोकायुक्त के नाम से जाना जाएगा।

बशर्ते लोकायुक्त की नियुक्ति उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के साथ सलाह-मशविरा करके की जाए, सिवाय तब, जब ऐसी नियुक्ति उस समय की जाए, जब गुजरात राज्य की विधानसभा भंग कर दी गई हो, या गुजरात राज्य में संविधान के अनुच्छेद 356 के अंतर्गत उद्घोषणा लागू हो, विधानसभा में विपक्ष के नेता के साथ सलाह-मशविरे के बाद

या अगर ऐसा कोई नेता नहीं है, अध्यक्ष के आदेश के अनुसार सदन में विपक्ष के सदस्यों द्वारा उसकी ओर से निर्वाचित किया गया कोई व्यक्ति हो।''

कर्नाटक अधिनियम के प्रावधानों की व्याख्या अनिवार्य रुप से इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि कर्नाटक में जिस व्यक्ति की नियुक्ति उप लोकायुक्त के रुप में की जानी है, वह उच्च न्यायालय का न्यायाधीश रह चुका हो, और मुख्यमंत्री की सलाह पर राज्यपाल द्वारा उसकी नियुक्ति की जाए। सलाह देने से पहले मुख्यमंत्री उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और कर्नाटक विधान परिषद के अध्यक्ष, विधानसभा स्पीकर, कर्नाटक विधान परिषद में विपक्ष के नेता और कर्नाटक विधानसभा में विपक्ष के नेता से सलाह अवश्य करें।

गुजरात अधिनियम में जिस प्रक्रिया का जिक्र किया गया है उसके अनुसार राज्यपाल की स्वीकृति से नियुक्ति की

जा सकती है। राज्यपाल, जैसाकि उच्चतम न्यायालय ने कहा है, मंत्रिपरिषद की मदद और सलाह से काम करेगा। मुख्यमंत्री/मंत्रिपरिषद उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और विपक्ष के नेता से सलाह करेगा। गुजरात अधिनियम में इस्तेमाल महत्वपूर्ण शब्द ''सलाह-मशविरा'' है।

मुद्दा यह है कि क्या कर्नाटक अधिनियम में ''सलाह-मशविरा''शब्द का अर्थ गुजरात अधिनियम में इस्तेमाल इसी शब्द के अर्थ से अलग हो सकता है? कर्नाटक के फैसले में कार्यपालिका और न्याय पालिका के बीच संतुलन दिखता है। यह व्याख्या के नियम का पालन करता है यानि वास्तविक व्याख्या जो स्पष्ट रूप से विधायिका की भावना को व्यक्त करती है।

कर्नाटक की राय

उच्चतम न्यायालय ने कर्नाटक के फैसले में सही राय दी है कि सलाह-मशविरा सार्थक और कारगर होना चाहिए। मुख्यमंत्री जिसके नाम की सिफारिश करना चाहते हैं उस पर राज्यपाल को बाकी सभी से सलाह करनी चाहिए। कर्नाटक के मामले में उच्चतम न्यायालय की दो समान राय इस प्रकार हैं :-

'' मुख्यमंत्री द्वारा दी गई सलाह प्रमुख है और न कि उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश समेत सलाह देने वालों की..... ....मेरी राय में अधिनियम की धारा 3 (2) (ए) और (बी) की व्यवस्था और लेकिन हम चाहे जितना भी खींचतान कर लें, धारा 3 (2) (ए) और (बी) में जो उल्लेख किया गया है उसके मायने यह कतई नहीं हैं कि कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की राय को श्रेष्ठ माना जाए। इसलिए मेरा मत है, उच्च न्यायालय द्वारा दिये गए विभिन्न निर्देश कि मुख्य न्यायाधीश की राय श्रेष्ठ है, अधिनियम के दायरे से परे है और उच्च न्यायालय ने विधायिका के कामकाज में दखल दिया है जिसकी कानून में इजाजत नहीं है।

....

लेकिन मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि सलाह देने वाले किसी की भी राय सर्वोपरि नहीं है और मुख्यमंत्री, द्वारा सुझाए गए नाम के समेत सलाह देने वालों द्वारा सुझाए गए नामों पर विचार-विमर्श के बाद, अधिनियम के तहत मुख्यमंत्री उप लोकायुक्त की नियुक्ति के लिए राज्य के राज्यपाल को कोई नाम सुझा सकते हैं।.''.

उच्चतम न्यायालय की दूसरी समान राय इस प्रकार है:-

''सामान्य तौर पर, यह मुख्यमंत्री ही होना चाहिए क्योंकि वह राज्यपाल को सलाह देते हैं और एक तरह से देखा जाए तो नियुक्ति के मामले में उनकी प्राथमिक जिम्मेदारी बनती है।..... .... .यह नहीं भूलना चाहिए कि उप लोकायुक्त की नियुक्ति सलाह-मशविरे की एक प्रक्रिया है जिसमें अनेक संवैधानिक संस्थाओं को शामिल किया जाता है और अधिनियम के संदर्भ में कोई भी संवैधानिक संस्था एक दूसरे से छोटी-बड़ी नहीं होती। . ...इसलिए मैं उच्च न्यायालय से सहमत हूं कि अधिनियम के तहत उप लोकायुक्त की नियुक्ति के लिए सिफारिश मुख्यमंत्री की ओर से ही की जानी चाहिए और केवल उनकी सिफारिश पर विचार किया जाना चाहिए..... .....

...जहां तक अधिनियम की धारा 3 (2) (बी) का प्रश्न है, उप लोकायुक्त की नियुक्ति की प्राथमिक जिम्मेदारी मुख्यमंत्री की होती है जिसे राज्यपाल को सलाह देनी होती है। चूंकि मुख्य न्यायाधीश ही केवल वैधानिक संस्था नहीं है जिससे मुख्यमंत्री को राज्यपाल को अपनी सलाह देने से पहले सलाह करनी पड़ती है, यह नहीं कहा जा सकता कि केवल इनकी ही राय बाकी सारी संवैधानिक संस्थाओं के लिए बाध्य होगी .....।''

कर्नाटक के मामले में उच्चतम न्यायालय के फैसले में यह सही ठहराया गया है कि मुख्य न्यायाधीश समेत तमाम सलाहकारों के साथ सार्थक सलाह-मशविरा होना चाहिए। इसमें मुख्यमंत्री को प्राथमिकता दी गई है न कि उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को।

गुजरात की राय

गुजरात लोकायुक्त के मामले में

नौ दिन के अंतराल में लोकायुक्त और उप लोकायुक्त की नियुक्ति के बारे में उच्चतम न्यायालय द्वारा साफ तौर पर अलग-अलग राय दी गई है। गुजरात में कानून किसी अन्य राज्य में कानून से अलग कैसे हो सकता है। बाद के फैसले में दिया गया यह कारण कि दो अधिनियमों की व्यवस्था अलग-अलग है, ठोस नहीं दिखाई देता क्योंकि दोनों अधिनियम में यह व्यवस्था है कि उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश समेत तमाम सलाहकारों के साथ मुख्यमंत्री द्वारा सलाह मशविरा किया जाए। तमाम बातों के विपरीत दोनों अधिनियमों में व्यवस्था लगभग एक जैसी है।

उच्चतम न्यायालय की राय एकदम अलग है। उच्चतम न्यायालय का कहना है, ''मुख्य न्यायाधीश की राय को सबसे अधिक महत्व देने का का कारण यह है कि उनकी स्वतंत्र हैसियत है और लोकायुक्त पद पर उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश ही नियुक्ति के योग्य हैं, इसलिए मुख्य न्यायाधीश लोकायुक्त पद पर उपयुक्त व्यक्ति का चयन करने के लिए सर्वोत्तम व्यक्ति हैं. ....

इस विषय में मुख्य न्यायाधीश की राय सबसे महत्वपूर्ण है। मुख्यमंत्री द्वारा इस तरह की सिफारिश को स्वीकार न करना ''निरर्थक'' हो जाता है। ....इसके अतिरिक्त, एक व्यक्ति की सीमित शक्ति (मुख्यमंत्री!) को असीमित शक्ति के इस्तेमाल की इजाजत नहीं दी जा सकती।

विरोधाभास

नौ दिन के अंतराल में लोकायुक्त और उप लोकायुक्त की नियुक्ति के बारे में उच्चतम न्यायालय द्वारा साफ तौर पर अलग-अलग राय दी गई है। गुजरात में कानून किसी अन्य राज्य में कानून से अलग कैसे हो सकता है। बाद के फैसले में दिया गया यह कारण कि दो अधिनियमों की व्यवस्था अलग-अलग है, ठोस नहीं दिखाई देता क्योंकि दोनों अधिनियम में यह व्यवस्था है कि उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश समेत तमाम सलाहकारों के साथ मुख्यमंत्री द्वारा सलाह मशविरा किया जाए। तमाम बातों के विपरीत दोनों अधिनियमों में व्यवस्था लगभग एक जैसी है।

एक दूसरे से उलट दोनों राय विधायिका का अंग होने के नाते मेरे मन में संदेह पैदा करती है। भविष्य में लोकायुक्त की नियुक्ति के लिए अगर संसद समान अधिकार प्राप्त सदस्यों की समिति बनाती है तो क्या मुख्य न्यायाधीश

~~~~~~~~~~☯☯☯~~~~~~~~~~

एक दूसरे से उलट दोनों राय विधायिका का अंग होने के नाते मेरे मन में संदेह पैदा करती है। भविष्य में लोकायुक्त की नियुक्ति के लिए अगर संसद समान अधिकार प्राप्त सदस्यों की समिति बनाती है तो क्या मुख्य न्यायाधीश केवल परामर्श देने वाले और एक भागीदार या उनकी राय सर्वोपरि होगी और समिति के बाकी सदस्यों के लिए बाध्यकारी होगी।

~~~~~~~~~~☯☯☯~~~~~~~~~~

केवल परामर्श देने वाले और एक भागीदार या उनकी राय सर्वोपरि होगी और समिति के बाकी सदस्यों के लिए बाध्यकारी होगी। इस अस्पष्टता को दूर करने की जरुरत है और व्याख्यात्मक प्रक्रिया को स्पष्ट बनाना होगा।

एक ही शब्द का अलग-अलग अर्थ निकालना वो भी तब जब संदर्भ एक जैसा हो, इसका इतिहास में कोई उदाहरण नहीं है। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान नाजी जासूसों को एहतियातन हिरासत में लेने के मामले में हाउस ऑफ लॉर्ड्स में बहुमत ने विदेश मंत्री की तसल्ली के लिए शांति काल के दौरान की गई व्याख्या से अलग व्याख्या की थी। कानून के इतिहास में जिस मामले में सबसे ज्यादा असहमति रही वह लीवरसेज में लॉर्ड एटकिन बनाम सर जॉन एंडरसन का था। मैं सिर्फ उनके महत्वपूर्ण शब्द दोबारा पेश कर सकता हूं-''इस देश में अगर कोई युद्ध हो तो ऐसा नहीं है कि कानूनी प्रावधान न हो। कानून उनमें बदलाव किया जा सकता है लेकिन युद्ध में भी उसकी वही भाषा होती है जो शांति के दौरान होती है। . ... मैं सहमत नहीं हूं, और अगर मुझे ही इसकी व्याख्या करनी पड़े और शब्दों की खींचतान करके अर्थ निकालना पड़े तो भी मंत्री को इस बात का असीमित अधिकार नहीं है कि वह किसी को बंदी बनाने की पैरवी कर सके। कारावास का अनियंत्रित अधिकार देने वाले शब्दों को अनायास रूप से गढ़ने के खिलाफ मंत्री का विरोध करता, संक्षेप में अगर दोहराया जाए, इन शब्दों का केवल एक ही अर्थ है, कॉमन लॉ और कानूनी पत्रकों में अर्थ के साथ इनका इस्तेमाल किया जाता है, जिस संदर्भ में आप यहां अर्थ निकाल रहे हैं उस संदर्भ में कभी नहीं निकाला जाता, अपने सामान्य अर्थ में बचाव के रुप में इसे लिया जाता हैं, जब मुझे अपने मतलब की बात लगी तो हमने सलाह मशविरा शब्द का एक अर्थ निकाल लिया और दूसरी स्थिति में अपनी सुविधानुसार दूसरा अर्थ निकाल लिया। अगर ये प्रासंगिक भी होता, जो कि इस मामले में नहीं है, यह कोई बेतुकी बात नहीं है या उसका कोई अप्राकृतिक अर्थ निकले। बताए गये अर्थ से मैं केवल एक ही प्रभावशाली शक्ति को जानता हूं।'' जब मैं हम्टी डम्टी शब्द घृणा के भाव से कहता हूं, ''ये वही मतलब रखेगा जो अर्थ मैं उसे देना चाहता हूं मतलब ''न कम न जयादा। ''सवाल यह है,'' एलिस कहती है, ''क्या आप शब्दों का अर्थ निकाल सकते हैं''

"The question is,"said Alice, "whether you can make words mean different things." "The question is,"said Humpty Dumpty, "which is to be master- "that's all"

एलिस 'सलाह मशविरे' का केवल एक अर्थ है, चाहे वह गुजरात, कर्नाटक या देश का कोई भी हिस्सा हो।'' ■

(लेखक राज्यसभा में विपक्ष के नेता हैं)

ना विरोध, ना बातचीत केवल कठोर कार्रवाई हो

✍ यशवंत सिन्हा

पिछले 65 वर्षों से भारत के नीति-निर्माता इस बात पर दुविधा में पड़े हुए हैं कि आखिर पाकिस्तान से किस प्रकार का व्यवहार हो। इसी अस्पष्टता की कमी के कारण भारत पाकिस्तान के मुकाबले सदैव नुकसान उठाता चला आ रहा है। अब समय आ गया है कि पाकिस्तान से व्यवहार करने के लिए सभी प्रकार के ढुलमुल, संकोची और वाक्छल रवैय्यों से हटकर उसके साथ दृढ़ता और संकल्पबद्ध होकर अपना रूख इख्तियार करें।

दूसरी तरफ, पाकिस्तान है जो आज भी इस बात में यकीन रखता है कि वह भारत को बुरी तरह से चोट पहुंचा कर उसे लहुलुहान कर डालेगा। वह भारत को अपना शत्रु देश मानता है और सदैव ही भारत के साथ सैन्य रूप में समकक्ष बनने का प्रयास करता रहता है। यह बात विशेष रूप से जनरल परवेज मुशर्रफ की आत्मकथा में दिखाई पड़ती है जो उस समय प्रकाशित हुई थी जब वे पाकिस्तान के राष्ट्रपति थे।

इस आत्मकथा में उन्होंने बार-बार भारत का नाम लेकर भारत को शत्रु राज्य की संज्ञा दी है और कहा है कि पाकिस्तान को, जब भी आवश्यक हो, भारत को सबक सिखाना चाहिए। हमें याद रखना होना कि पाकिस्तान का नियंत्रण पाकिस्तानी सेना के हाथों में है और इस सुप्रीमेसी के पीछे भी भारत के साथ शत्रुता एक आधार बनी हुई है। पाकिस्तानी सेना कभी भी पाकिस्तानी राज्य से अपना शिकंजा कम नहीं करना चाहेगी और इसलिए उसके लिए अनिवार्य है कि वह भारत को अपना सर्वोत्तम दर्जे का शत्रु समझे।

इस पृष्ठभूमि में, आइए हम देखें कि सीमापार आतंकवाद की घटना के पीछे पाकिस्तानी रवैय्या क्या है, जिसे पाकिस्तान पिछले 25 वर्षों से भारत के खिलाफ प्रचारित करता आ रहा है। पहले वह इंकार करता है। पाकिस्तान का कहना होता है कि हमारा इसमें कोई हाथ नहीं है। उदाहरण के लिए पाकिस्तान ने तो इससे भी इंकार किया था कि अजमल कसाब पाकिस्तानी नागरिक है। उनके लिए तो हर आतंकवादी जिहादी यानी स्वतंत्रता संघर्ष में जुटा है।

उसका दूसरा तर्क यह रहता है कि पाकिस्तान में सभी 'नान-स्टेट एक्टर' इस प्रकार की करतूतों के लिए जिम्मेदार होते हैं और पाकिस्तान को उनसे कोई लेना देना नहीं है। 6 जनवरी 2004 को इस्लामाबाद में श्री अटल बिहारी वाजपेयी की यात्रा के दौरान एक संयुक्त प्रेस वक्तव्य जारी किया गया था, जिसमें पाकिस्तान ने बहुत स्पष्ट और साफ शब्दों में इस बात पर सहमति जताई थी कि पाकिस्तान अपने नियंत्रण वाले किसी भी क्षेत्र या क्षेत्रों का इस्तेमाल भारत के विरूद्ध नहीं करने देगा। उस समय पाकिस्तान ने हमें यह नहीं बतलाया था कि यह केवल पाकिस्तानी राज्य एजेंसियों पर ही लागू होती है और यह नहीं कहा था कि यह पाकिस्तान की धरती से काम करने वाले 'नान-स्टेट एक्टर्स' पर लागू नहीं होती है।

स्पष्ट है कि यह मुम्बई में 26/11 आतंकवादियों के हमले के बाद सोची समझी बात है। उसका तीसरा तर्क यह होता है कि पाकिस्तान तो स्वयं ही आतंकवादियों का शिकार है जिसका मतलब है कि हम दोनों ही बराबरी पर खड़े हुए हैं। वर्तमान सरकार ने इस बात को हवाना में हुई शिखर सम्मेलन की बातचीत में स्वीकार कर लिया था। उसका चौथा तर्क होता है कि भारत भी पाकिस्तान में हिंसा फैलाने का उतना ही दोषी है, जिस तर्क को उसने शरम-एल-शेख में संयुक्त वक्तव्य जारी कर ब्लूचिस्तान का उल्लेख कर हमें सफलतापूर्वक समझाने के लिए स्वीकार करने पर विवश किया। पांचवां तर्क यह होता है कि पाकिस्तान सदैव ही तीसरे पक्ष को शामिल कर इस मुद्दे का अन्तर्राष्ट्रीयकरण करने की कोशिश करता है।

अतः, हाल ही में नियंत्रण रेखा पर हुई भयावह घटना के बाद भी पाकिस्तान का सुझाव था कि इस घटना की जांच संयुक्त राष्ट्र से करवाई जाए। और अन्ततः, जब आप पाकिस्तान की ऐसी घटनाओं की बात को द्विपक्षीय वार्ता में नोटिस में लाते हैं तो उनका तर्क होता है कि जो कुछ बीत गया उसे भूल जाओ और आगे की बात सोचो।

बीती बातों को भूलने का मतलब न केवल पुरानी घटनाओं को भुला दिया जाए, जो विगत में, या विगत सप्ताह में या विगत महीने में हुई हों, बल्कि इसका मतलब उन समझौतों से भी रहता है जिन पर विगत में हस्ताक्षर हुए हों। एनडीए सरकार पर दोष मढ़ा जाता है कि आगरा

वार्ता विफल हो गई थी, परन्तु हममें से कितने लोगों को याद होगा कि आगरा में जो वार्ता विफल हुई थी, वह इस बात पर हुई थी कि हमने संयुक्त वक्तव्य में शिमला समझौते करने के उल्लेख पर इसरार किया था, जिसे जनरल मुशर्रफ ने स्वीकार नहीं किया था।

इसके विपरीत, एनडीए से अपना कार्यभार छोड़ने के बाद जब मुशर्रफ मनमोहन सिंह से बातचीत करने के लिए भारत आए तो उन्होंने कहा था कि 6 जनवरी 2004 के संयुक्त प्रेस वक्तव्य के उल्लेख करने पर इसरार न किया जाए और तब मनमोहन सिंह जी ने चुपचाप मुशर्रफ के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था जबकि स्वयं उनके विदेश मंत्रालय का परामर्श इसके खिलाफ था।

अत:, यह कोई हैरत की बात नहीं है कि भारत-पाकिस्तान सम्बन्धों का 65 वर्ष पुराना इतिहास केवल साढ़े तीन युद्धों का इतिहास नहीं है, बल्कि यह पाकिस्तान का ऐसा इतिहास है, जिसमें उसने भारत के साथ किए गए वायदों को कदम-कदम पर तोड़ा है, उसने अपनी हर प्रतिबद्धता के साथ बेईमानी की है और भारत के खिलाफ हिंसा और सीमापार आतंकवाद का युद्ध छेड़ रखा है।

जो लोग पाकिस्तान के साथ मित्रता की बात करते हैं, वे जानबूझ कर इस इतिहास को भूल जाते हैं और वे चाहते हैं कि इसी प्रकार की अनुचित नियमितताओं का इतिहास दोहराया जाए तो हम पाकिस्तान के साथ व्यवहार करें तो कैसे करें? पहली बात तो यही है कि 'पाकिस्तान के साथ बातचीत न करने का मतलब' यह नहीं है कि हम उसके साथ अवश्य ही युद्ध करें। 'बात न करना' और 'युद्ध' के बीच और भी अनेक राजनयिक और सैन्य विकल्पों का विशाल भण्डार है।■

(सौजन्य : इकानॉमिक टाइम्स में प्रकाशित लेख का हिन्दी भावानुवाद)

सीमा पर पाकिस्तानी सैनिकों की बर्बरता की पराकाष्ठा

पुंछ (जम्मू-कश्मीर) में दो भारतीय सैनिकों की बर्बर हत्या पाकिस्तान की अमानवीयता की पराकाष्ठा को दर्शाता है। गत 8 जनवरी को पाकिस्तानी सैनिक युद्धविराम का उल्लंघन कर भारतीय सीमा में घुस आए और जम्मू एवं कश्मीर के पुंछ जिले स्थित नियंत्रण रेखा (एलओसी) के निकट एक चौकी पर तैनात दो भारतीय जवानों - राजपूताना राइफल्स के लांस नायक श्री सुधाकर सिंह और लांस नायक श्री हेमराज की गला रेतकर हत्या कर दी। जबकि श्री हेमराज की सिर कटी लाश मिली थी।

भाजपा ने इस मसले पर केंद्र सरकार को आगाह करते हुए कहा कि पाकिस्तान को इस मामले में न सिर्फ दुनिया के सामने बेनकाब किया जाना चाहिए, बल्कि यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि पड़ोसी देश के साथ भारत को क्या करना है और क्या नहीं करना है।

भाजपा के वरिष्ठ नेता व राज्यसभा में नेता विपक्ष अरुण जेटली ने कहा कि भारत की सीमा में घुसकर पाक सैनिकों ने जिस बर्बर तरीके से दो भारतीय सैनिकों की हत्या की, उससे इस हमले के पीछे की मंशा का अंदाजा लगाया जा सकता है। पाकिस्तान की हरकत पर अब केंद्र की जिम्मेदारी है कि इस क्षेत्र की निगरानी, हमले में शामिल पाकिस्तानी सैन्य अधिकारियों व उनसे जुड़े दूसरे लोगों के बारे में तथ्य इकट्ठा करे, ताकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान को बेनकाब किया जा सके। यह तब और जरूरी हो जाता है, जब पाकिस्तान इस मामले में अपनी करतूत से इन्कार कर रहा है।

भारत-पाकिस्तान सीमा पर युद्धविराम उल्लंघन की घटना में बेरहमी से मारे गए दो भारतीय जवानों में से एक मथुरा के शेरनगर गांव के रहनेवाले लांस नायक शहीद हेमराज की पत्नी धर्मवती देवी और मां मीना देवी गांव वालों के साथ भूख हड़ताल पर बैठी। मां और पत्नी ने मांग रखी कि जब-तक शहीद हेमराज का सिर नहीं मिलता है तब तक हिंदू रीति-रिवाज से अंतिम संस्कार अधूरा है।

दूसरे शहीद लांसनायक सुधाकर सिंह मध्य प्रदेश के सीधी से ताल्लुक रखते थे। जहां शहीद सुधाकर के अंतिम संस्कार के दौरान मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान खुद मौजूद थे, वहीं शहीद हेमराज के अंतिम संस्कार के वक्त उत्तर प्रदेश का एक भी मंत्री या विधायक तक नहीं पहुंचा।

शहीद लांस नायक श्री हेमराज सिंह के परिवार वालों से सहानुभूति जताने के लिए एवं दुख की घड़ी में उनके साथ खड़े होने के लिए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी, लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज एवं पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह उनके गांव गए। वहां, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष श्री सुषमा स्वराज जमकर केंद्र सरकार पर बरसीं। उन्होंने तल्ख अंदाज में केंद्र सरकार से कहा कि यदि शहीद हेमराज का सिर नहीं ला सकते हो तो कम-से-कम 10 पाकिस्तानी सैनिकों का सिर लाकर दो। ऐसी घटनाएं लगातार हो रही हैं और हमें हर हाल में बदला लेने की जरूरत है। राष्ट्र की हार्दिक इच्छा यही है कि हम कहीं से भी खुद को कमजोर साबित न करें। ■

'युवराज' की ताजपोशी

✍ प्रभात झा

राहुल गांधी को कांग्रेस पार्टी के उपाध्यक्ष पर पदोन्नत किए जाने को माना जा रहा है कि यह इतनी बड़ी महत्वपूर्ण घटना घट गई है जिससे पार्टी की नियति ही बदल जाएगी। परन्तु, क्या ऐसा होना वाकई संभव है? प्रत्येक व्यक्ति को उनकी काबिलियत पर संदेह है। अब तक देखा गया है कि वह बिहार, उत्तर प्रदेश और गुजरात में असफल रहे। वह युवा कांग्रेस और एनएसयूआई के लिए बहुत कुछ करने में बेहद असफल रहे, जबकि यह सीधे ही उनके ही नेतृत्व में चल रहा था। उन्होंने देश के लिए भी कोई राजनीतिक विज़न का परिचय नहीं दिया और कोई भी व्यक्ति उनके अपने इतिहास, राजनीति, विदेश नीति, सुरक्षा या अर्थव्यवस्था के विचारों को भी नहीं जानता है।

जब पूरा देश किसी प्रमुख मुद्दे पर बहस या चर्चा में लीन होता है या लोग सड़कों पर आकर अपनी समस्याओं का जवाब मांगते हैं तो श्रीमान गांधी जी अपनी अनुपस्थिति दर्ज करा के गहरी चुप्पी में लीन हो जाते हैं। समझा जाता है कि वैसे तो वे युवाओं के नेता हैं, परन्तु क्या वे युवा पीढ़ी में विश्वास पैदा कर उन्हें प्रेरित कर पाए हैं? और ऐसा हो भी कैसे सकता है जब वह उन लोगों के बीच में कहीं दिखाई ही नहीं पड़ते हैं। सच तो यह है कि श्री गांधी जी भाई-भतीजावाद और वंशवाद राजनीति की कांग्रेसी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने के इलावा कहीं कुछ भी नहीं है। कांग्रेस ने स्वयं को वंशवाद की राजनीति पर इतना निर्भर बना लिया है कि उसके पास आज श्री राहुल गांधी को नेतृत्व सौंप देने के अलावा अन्य कोई चारा ही नहीं बचा था।

यदि कांग्रेस समझती है कि वह श्री गांधी को अपने एक नेता के रूप में दिखा कर लोगों को बेवकूफ बना सकती है तो यह पार्टी स्वयं ही अपने को मूर्ख बना रही है। लोग इस तरह की चालबाजी में फंसने वाले नहीं हैं।

इस बात पर कितनी दया आती है कि जिस जयपुर चिंतन शिविर को (ऐसे अवसर पर पार्टी को आत्ममंथन करना चाहिए था) वह अवसर 'चिंता शिविर' में बदल गया, जिससे पार्टी की घबराहट ही दिखाई पड़ती है। दरअसल, इस अधिवेशन में कांग्रेस को लोगों की समस्याओं का कोई जवाब सूझा ही नहीं! न ही कांग्रेस ने लोगों को कोई ठोस योजना प्रदान की जिससे उनकी पीड़ा मिट सके।

श्री गांधी के भाषण की बात करें तो हम देखेंगे कि उनके भाषण का एकमात्र लक्ष्य कांग्रेस के लोगों को भावुक बनाना था जिससे वे बिना सोचे समझे इस विशेष परिवार के नाम पर उनके नेतृत्व को स्वीकार कर लें। परन्तु क्या इससे भारत के उन लोगों के लिए इसका जरा सा भी मतलब दिखाई पड़ता है जो क्षोभ और आक्रोश से उत्तेजित हैं?

श्री गांधी ने भले ही जयपुर में व्यवस्था के बारे में बड़ा शोर मचाया हो परन्तु वह इतना भी बतला नहीं पाए कि आखिर इस व्यवस्था को बिगाड़ने के लिए जिम्मेदार कौन है? जरा सोचिए तो सही- कांग्रेस कुछ थोड़े से वर्षों को छोड़कर स्वतंत्रता के बाद से देश पर शासन करती आ रही है। वह पिछले नौ वर्षों से भी यूपीए की मठाधीश बन कर सत्ता में है। इस काल में, उसने यदि देश को कुछ दिया तो क्या दिया- केवल घोटाले, भ्रष्टाचार, परम कुशासन, आर्थिक मंदी और इस तरह वह सभी मोर्चों पर विफल रही। परन्तु, कांग्रेस है कि जयपुर में आत्ममंथन करने की बजाए उसने वंशवाद राजनीति का पुनः समर्थन कर देश पर लाद दिया।

इससे पूर्व, श्री गांधी महासचिव थे और अब उनका कद बढ़कर उपाध्यक्ष कर दिया गया है। क्या कांग्रेस इस प्रकार के बनावटी बदलाव से अपनी किस्मत को उच्च शिखर पर ले जाने की आशा करती है? श्री गांधी तो पहले भी महासचिव जैसे उच्च पद पर रहते हुए विफल रह चुके हैं, इसलिए उनके इस बदलाव के बाद हुई इस पदोन्नति को भी बंडलबाजी के अलावा और क्या कहा जा सकता है? वह पहले से ही पार्टी में हर प्रकार का निर्णय लिया करते थे, परन्तु वे पार्टी को कुछ दे नहीं पाए। यदि कांग्रेस समझती है कि वह श्री गांधी को अपने एक नेता के रूप में दिखा कर लोगों को बेवकूफ बना सकती है तो यह पार्टी स्वयं ही अपने को मूर्ख बना रही है। लोग इस तरह की चालबाजी में फंसने वाले नहीं हैं। एक बार फिर से सिद्ध हो गया है कि कांग्रेस के पास देने को कुछ भी नहीं है, यहां तक कि वह एक कुशल नेता भी देश को नहीं दे सकती है। ■

(लेखक राज्यसभा के सांसद हैं एवं मध्य प्रदेश के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष रहे हैं)

देश के लिए खतरा बनता नक्सलवाद

✍ विकास आनन्द

जब पूरा देश पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा दो भारतीय सैनिकों की हत्या करके और निर्ममता से उनके सिर काट दिए जाने की अमानवीय पूर्ण घटना से चिंतित था उसी समय देश के अंदर के माओवादियों ने कहीं उनसे अधिक अमानवीयता का परिचय देते हुए लातेहार में केन्द्रीय सुरक्षा बलों की हत्या करने के बाद उनके मृत पड़े शरीर में बम प्रत्यारोपित कर दिया था। शायद यह नक्सलयों द्वारा किया गया सबसे बड़ी अमानवीय कुकृत्य है।

जब पूरा देश पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा दो भारतीय सैनिकों की हत्या करके और निर्ममता से उनके सिर काट दिए जाने की अमानवीय पूर्ण घटना से चिंतित था उसी समय देश के अंदर के माओवादियों ने कहीं उनसे अधिक अमानवीयता का परिचय देते हुए लातेहार में केन्द्रीय सुरक्षा बलों की हत्या करने के बाद उनके मृत पड़े शरीर में बम प्रत्यारोपित कर दिया था। शायद यह नक्सलयों द्वारा किया गया सबसे बड़ी अमानवीय कुकृत्य है।

ये नक्सलवादी कम्युनिस्ट विचारधारा का वह धड़ा है जो सत्ता लोकतांत्रिक ढंग से पाने में विश्वास नहीं करता। ये सत्ता को खूनी क्रांति से ही पाना चाहते हैं। 50 वर्षों में मानों उनका मकसद ही हिंसा, निर्दोषों की हत्या, जान-माल की क्षति पहुंचाना हो गया हो।

देश के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह स्वयं नक्सलवाद को देश का सबसे बड़ा आंतरिक खतरा बताया है। जहां इनकी हिंसक गतिविधिया है उसे 'लाल गलियारे' के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इन वामपंथी अतिवादियों की मुख्य रूप से दो संगठन पीपुल्स वार ग्रुप और माओवादी कम्युनिष्ट सेंटर (एमसीसी) है। ये दोनों मुख्यत: बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा और छत्तीसगढ़ में सक्रिय है। पीपुल्स वार ग्रुप आंध्र प्रदेश में ज्यादा सक्रिय है। यह 'लाल गलियारा' पश्चिम बंगाल से शुरू होकर अब उड़ीसा, महाराष्ट्र, झारखण्ड और कर्नाटक तक फैल चुका है। इनकी सक्रियता ज्यादातर जनजातीय क्षेत्र में है। ये वही पर अपना पाव पसारते हैं जहां गरीबी बेरोजगारी और अशिक्षा हो। ऐसे क्षेत्रों में इन्हीं अपने लिए स्थानीय समर्थन लेना आसान होता है। आजकल नक्सलियों के हमले स्कूलों पर बढ़ गए हैं। 2011 के गृहमंत्रालय के आंकड़े के अनुसार ये 11 महीने में 260 विद्यालय को ध्वस्त कर दिये थे। 'इंस्टिट्यूट ऑफ पीस कॉनाफ्लिक्ट स्टडीज' के आंकड़ों के अनुसार 1989 से 2012 तक नक्सल हिंसा में 6,432 नागरिक और 2,312 सुरक्षा बल कर्मी मारे जा चुके हैं।

ये जानते हैं कि जब तक लोग पिछड़े रहेंगे, अशिक्षित रहेंगे उनका स्थानीय स्तर पर समर्थन भी मिलता रहेगा। यदि शिक्षित हो जाते हैं तो विकास की मुख्य धारा से जुड़ जाएंगे और उन्हें समर्थन मिलना बंद हो जाएगा। ये सड़कों को भी बम से उड़ाते हैं और बनने से रोकते हैं। बिल्कुल जहां ये सक्रिय है उन जगहों को अलग-थलग करके रखना चाहते हैं।

मनमोहन सिंह इसे सबसे बड़ा आन्तरिक सुरक्षा की चुनौती तो मानते हैं। लेकिन नक्सलवाद सुरक्षा के साथ-साथ विकास की भी चुनौती है। भारत सरकार को चाहिए किसी तरह उन क्षेत्रों को विकास करके देश की मुख्यधारा से जोड़े जिससे नक्सलवाद जैसे अमानवीय हिंसक विचारधारा को फैलने से रोका जा सके।

यह भी सही नहीं है कि नक्सलवाद शुद्ध रूप से आंतरिक मामला है। इनके लिंक बाह्य तत्वों से भी जुड़ा हुआ है। इनको सर्थन नेपाल के माओवादियों, पूर्वोत्तर भारत में सक्रिय उग्रवादि ग्रुपों से पाकिस्तान के आईएसआई से भी मिलता है। जबसे नेपाल में सत्ता परिवर्तन हुआ है तबसे इनकी गतिविधियां भी बढ़ गई हैं। भारत-नेपाल और भारत-बांग्लादेश सीमाओं को पाकिस्तान का आईएसआई धड़ल्ले से भारत के नक्सलियों तक पहुंचने में उपयोग कर रहे हैं। समाचार पत्रों के खबरों और गुप्तचार एजेंसियों के रिपोर्टो के अनुसार माओवादियों को चीन

शेष पृष्ठ 30 पर

कुशल संगठक व विचारक राजनेता

✍ संजीव कुमार सिन्हा

स्वतंत्र भारत की राजनीति में कुछ ही महापुरूष ऐसे हुए हैं जो 'विचार और कर्म' दोनों के धनी हों। पं. दीनदयाल उपाध्याय ऐसे राजनीतिज्ञ थे जो कुशल संगठक तो थे ही साथ ही मौलिक विचारक भी थे।

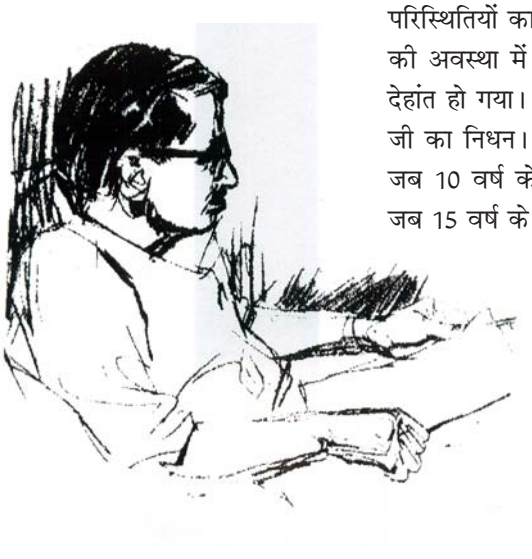

उन्होंने 16 वर्षों तक देशभर में प्रवास करके भारतीय जनसंघ को एक मजबूत संगठन बनाया तो 'एकात्ममानव दर्शन' जैसी विचारधारा का प्रतिपादन कर भारतीय राजनीति में राष्ट्रीय वैचारिक अधिष्ठान प्रस्तुत किया। स्वतंत्र भारत में राजनीतिक चिंतक के रूप में उन्होंने भारतीय राजनीति को सबसे अधिक प्रभावित किया और भारतीय जनसंघ को एक विशिष्ट दल बनाया।

दीनदयालजी "सादा जीवन-उच्च विचार" के पुजारी थे। उनकी वेशभूषा सामान्य थी, लेकिन उनके विचार बड़े प्रेरक और प्रखर थे। खद्दर का कुर्ता, धोती, साधारण कैनवास के रबड़ के सोल वाले जूते, मोटा चश्मा, एक सामान्य झोला, जिसमें कुछ किताबें और एक जोड़ी पहनने के कपड़े। आम आदमी की तरह उनकी वेशभूषा थी।

मथुरा जिले के नगला चन्द्रभान ग्राम में 25 सितम्बर 1916 को जन्मे दीनदयालजी ने बचपन से ही विकट परिस्थितियों का सामना किया। ढ़ाई वर्ष की अवस्था में जब वो थे तो पिता का देहांत हो गया। सात वर्ष के थे तो माता जी का निधन। नाना के यहां चले गए। जब 10 वर्ष के थे तो नाना का देहांत। जब 15 वर्ष के हुए तो मामी का निधन। जब वे नवीं कक्षा में पढ रहे थे तब छोटा भाई शिवदयाल का देहांत। 1935 में नानी चल बसी। 1940 में ममेरी बहन का निधन। मृत्यु ने उन पर निरंतर आघात किए। लेकिन उन्होंने इन परिस्थितियों का मन मजबूत कर सामना किया।

दीनदयालजी पढ़ने में बहुत तेज थे। मामा राधारमण, जो गंगापुर में सहायक स्टेशन मास्टर थे, के पास रहकर प्राथमिक शिक्षा की पढ़ाई की। दसवीं की परीक्षा कल्याण हाईस्कूल सीकर से दी। वे न केवल प्रथम श्रेणी से उतीर्ण हुए वरन् समस्त बोर्ड की परीक्षा में वे सर्वप्रथम रहे। सीकर के महाराजा कल्याण सिंह उन्हें स्वर्णपदक और छात्रवृति दी। 1937 में इंटरमीडिएट बोर्ड की परीक्षा में बैठे और न केवल समस्त बोर्ड में सर्वप्रथम रहे वरन् सब विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त की। घनश्यामदास बिड़ला ने एक स्वर्णपदक और छात्रवृत्ति दी। 1939 में सनातन धर्म कॉलेज, कानपुर में प्रथम श्रेणी में बीए उत्तीर्ण किया। आगरा में एमए (अंग्रेजी) प्रथम वर्ष में उन्हें प्रथम श्रेणी के अंक मिले। ममेरी बहन की बीमारी के कारण द्वितीय वर्ष की परीक्षा न दे सके। 1941 में 25 की उम्र में बीटी करने प्रयाग गए।

दीनदयालजी 1937 में बीए की पढ़ाई के लिए कानपुर गए तब अपने सहपाठी बालूजी महाशब्दे के माध्यम से वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आए, वहीं उनकी भेंट संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार से हुई। स्वातंत्र्यवीर सावरकर जब कानपुर आए तो उन्होंने उनको शाखा आमंत्रित कर बौद्धिक वर्ग करवाया। कानपुर में सुंदर सिंह भंडारी उनके सहपाठी थे। दादाराव परमार्थ, बाबासाहब आपटे तथा भाऊराव देवरस ने उन्हें संघ कार्य के लिए जीवन समर्पित करने को उत्प्रेरित किया। 1941 में बीटी की लेकिन नौकरी नहीं की। गृहस्थी भी नहीं बसाई। अपनी पढ़ाई पूर्ण करने तथा संघ का द्वितीय वर्ष प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद प्रचारक बन गए और आजीवन प्रचारक रहे। वे संघ में 1937 से 1951 तक रहे।

दीनदयालजी सन् 1952 में जनसंघ के अखिल भारतीय महामंत्री बने। 1968 तक 16 वर्ष इस दायित्व को संभाला।

दीनदयालजी स्वाध्यायी प्रवृत्ति थे। जब भी समय मिलता लिखते-पढ़ते रहते थे।

दीनदयालजी सिद्धांतों से समझौता नहीं करते थे। उन्होंने भारतीय राजनीति में मूल्यों का परिष्कार किया। एक प्रेरणास्पद घटना है। सन् 1963 में

जौनपुर के जनसंघ के सांसद की मृत्यु हो जाने के कारण वहां लोकसभा का उपचुनाव हुआ। जौनपुर संघ और जनसंघ का गढ़ था। उस समय यह तय हुआ कि इस क्षेत्र से दीनदयालजी को लोकसभा में भेंजे ताकि वे लोकसभा के अंदर उदाहरण प्रस्तुत करें और उनकी प्रतिभा से देश को फायदा हो सके। इस उपचुनाव में कांग्रेस ने क्षत्रिय उम्मीदवार खड़ा कर दिया। उस समय लोगों ने दीनदयालजी से कहा कि आपके ब्राह्मण होने का प्रचार करना चाहिए। दीनदयालजी ने डांट दिया और कहा कि मैं ब्राह्मणों का नहीं, जनसंघ का उम्मीदवार हूं। हालांकि इस चुनाव में उन्हें अपेक्षित सफलता नहीं मिली।

कार्यकर्ता किसी भी संगठन का आधार होता है। दीनदयालजी कार्यकर्ताओं की संभाल करते थे। जनसंघ के दिनों से जुड़े रहे पंढरीराव कृदत्त एक संस्मरण में लिखते हैं, ''17 मार्च 1966 की घटना है। मैं उन दिनों धमतरी से विधायक चुना गया था। आसंदी पर नर्मदा प्रसाद जी, जो विधानसभा उपाध्यक्ष थे, वे विराजमान थे। ग्वालियर में छात्रों पर निर्मम लाठी चार्ज हुआ था उसको लेकर जोरदार बहस चल रही थी। स्थिति इतनी भयावह हो गई थी कि दो आदिवासी विधायकों को मार्शल, जो खाकी वर्दी में थे, घसीटते हुए सदन से बाहर ले जा रहे थे। मैं बार-बार कहता रहा कि आखिर छात्रों पर लाठी-गोली क्यों चलाई गई? मेरे प्रश्नों का जवाब न देते हुए उपाध्यक्षजी बार-बार ताव में झल्लाते और चिल्लाते रहे। परिस्थितियां मुझे भी उत्तेजित कर रही थी। इस बीच रिपोर्टर गैलरी के सामने जाकर मैंने चप्पल निकाली और आसंदी के समक्ष जो लोग लेखन कार्य में जुटे रहते हैं, उनकी ओर फेंक दिया। इसमें कोई दोमत नहीं मेरा उद्देश्य सभी का ध्यान आकर्षित करना था न कि आसंदी का अपमान करना। लेकिन इस घटना से सदन में सन्नाटा छा गया और मुझे पूरे सत्र के लिए निष्कासित कर दिया। इस घटना के बाद हमारे सभी सहयोगियों, जो जनसंघ विधायक थे, के हाथ-पांव फूल गए।

कुशाभाऊ ठाकरे जी ने दीनदयालजी से संपर्क किया और उन्हें आग्रह किया कि इस घटना से जो परिस्थितियां उत्पन्न हुई है उसमें आपका आना और मार्गदर्शन अनिवार्य लग रहा है। उसके बाद दीनदयालजी और विधायकों की बैठक हुई। दीनदयालजी ने मुझसे भी चर्चा की। मैंने शब्दश: सारी घटना बताई। उन्होंने एक वाक्य कहा, ''पंढ़रीराव क्रोध आए तो कोई बात नहीं पर क्रोध का स्वरूप सात्विक होना चाहिए।'' विधायकों के बीच उनका संबोधन हुआ। उन्होंने कहा कि इस घटना की कोई भी प्रशंसा नहीं करेगा परन्तु यह बात तो अवश्य समझना चाहिए कि आखिर सदैव शांत रहनेवाले पंढ़रीराव जी अचानक इतने क्रोधित क्यों हुए? वह कौन सी परिस्थितियां थी?

प्रामाणिकता दीनदयालजी के जीवन की पूंजी थी। जनसंघ के तत्कालीन महामंत्री नानाजी देशमुख इस सम्बंध में एक घटना का उल्लेख करते थे, ''एक दिन प्रात: हम दोनों मिलकर सब्जी खरीदने बाजार गए। दो पैसे की सब्जी ली। लौटकर घर पहुंचने को ही थे कि दीनदयालजी एकाएक रूक गए। उनका एक हाथ जेब में था, वे बोले, ''नाना बड़ी गड़बड़ हो गयी। मैंने पूछा, क्या गड़बड़ हो गई? तो उन्होंने कहा कि मेरी जेब में चार पैसे थे उनमें से एक पैसा खोटा था। वह खोटा पैसा ही उस सब्जी वाली को दे आया हूं। मेरे जेब में बचे दोनों पैसे अच्छे हैं। वह क्या कह रही होगी? चलो, उसे ठीक पैसा दे आएं।'' उनके चेहरे पर एक अपराधी जैसा भाव उतर आया था। हम दोनों वापस सब्जी वाली के पास पहुंचे। उसे वास्तविकता बताई तो कहने लगी, ''कौन ढूढ़ेगा तुम्हारा खोटा पैसा? जाओ जो दे दिया सो दे दिया।'' किंतु दीनदयाल जी नहीं माने। उन्होंने उस बुढ़िया के पैसे के ढेरे से अपना चिकना खोटा सिक्का ढूढ़ निकाला। उसके बदले में अपनी जेब से दूसरा अच्छा पैसा बुढ़िया को दे दिया। तब कहीं जाकर उनके चेहरे पर संतोष का भाव उभरा। बुढ़िया की आंखें डबडबा गई।'' वे प्रेरणा के सागर थे।

पार्टी की विचारधारा, नीति सिद्धांत कार्यसमिति और राष्ट्रीय परिषद् के प्रस्तावों में दीनदयालजी की भूमिका उल्लेखनीय होती थी। उनके ही अथक प्रयासों से पांचजन्य, स्वदेश और राष्ट्रधर्म जैसी राष्ट्रवादी विचारधारा को पुष्ट करने वाली पत्रिकाएं प्रारंभ हुई।

दीनदयालजी गांव-गांव तक प्रचार करते थे। ज्यादातर रेलगाड़ी में सफर करते थे। ऐसा इसलिए कि एक तो उन्हें पढ़ने-लिखने का समय मिलता था और स्टेशनों पर कार्यकर्ताओं से भेंट हो जाती थी।

दीनदयालजी की कुशल संगठन क्षमता से प्रभावित होकर भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने कहा था, ''यदि मुझे दीनदयालजी जैसे चार-पांच लोग मिल जाएं तो मैं पूरे देश में जनसंघ को खड़ा कर लूंगा।''

11 फरवरी 1968 के मनहूस दिन दीनदयालजी हमसे विदा हो गए। उनका शव मुगलसराय में पाया गया।

संसद में प्राय: किसी ऐसे व्यक्ति के लिए शोक प्रस्ताव पारित नहीं होता, जिसका संसद से कोई नाता ना रहे। दीनदयालजी जी ऐसे गिने चुने उन लोगों में रहे जिनके प्रति संसद में श्रद्धांजलि अर्पित की गई। ■

मेघालय, नगालैण्ड और त्रिपुरा में चुनाव का शंखनाद

पूर्वोत्तर क्षेत्र के चुनावों में भाजपा शक्तिशाली बनकर उभरेगी

राम प्रसाद त्रिपाठी

गत 11 जनवरी 2013 को निर्वाचन आयोग ने पूर्वोत्तर के तीन राज्यों-मेघालय, नगालैण्ड और त्रिपुरा के चुनावी कार्यक्रमों की उद्घोषणा कर एक अहम निर्वाचन वर्ष की शुरूआत का शंखनाद कर दिया है। कमीशन ने कानूनी अधिसूचना जारी कर इन राज्यों में फरवरी में विधानसभा चुनावों की प्रक्रिया का श्रीगणेश कर दिया है। अधिसूचना की तारीख से ही आदर्श आचार संहिता भी लागू हो गई है। कार्यक्रम के अनुसार त्रिपुरा में चुनाव 14 फरवरी को और नगालैण्ड तथा मेघालय में चुनाव 23 फरवरी को कराए जाएंगे। इन तीनों राज्य की विधानसभाओं में एक बात समान है कि इन सभी विधानसभाओं की सीटें 60 हैं। इन सभी विधानसभाओं की मतगणना 28 फरवरी को होगी।

अधिसूचना के अनुसार मेघालय, त्रिपुरा और नगालैण्ड विधानसभाओं का कार्यकाल, क्रमशः 10 मार्च, 16 मार्च और 18 मार्च को समाप्त हो जाएगा। इसी प्रकार इन राज्यों के मतदाताओं की संख्या 14 लाख, 23 लाख और 11 लाख है। निर्वाचन आयोग की अधिसूचना के अनुसार मेघालय में 2485, नगालैण्ड में 2023 और त्रिपुरा में 3018 मतदान केन्द्र होंगे। मेघालय और नगालैण्ड की अधिकांश सीटें अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में आती हैं, परन्तु त्रिपुरा में अनुसूचित जातियों के लिए 10 सीटें और अनुसूचित जनजाति के लिए 20 सीटें आरक्षित हैं।

त्रिपुरा में प्रत्याशी अपने नामांकन पत्र 21 जनवरी से भरना शुरू कर सकते हैं और इसकी आखिरी तारीख 28 जनवरी रहेगी। नामांकन पत्रों की जांच का काम अगले दिन 29 जनवरी को होगी तथा नामांकन पत्र वापसी की तारीख 31 जनवरी रहेगी। मेघालय और नगालैण्ड के प्रत्याशी अपना नामांकन पत्र 30 जनवरी से भरना शुरू कर 6 फरवरी 2013 तक भर सकते हैं। इन दो राज्यों के नामांकन पत्रों की जांच 7 फरवरी को होगी और वापस लेने की तारीख 9 फरवरी 2013 रहेगी।

भारत की राष्ट्रीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में पूर्वोत्तर राज्यों की राजनीतिक स्थिति की विशेषताएं समझना महत्वपूर्ण है। बुनियादी तौर पर, अरूणाचल प्रदेश, त्रिपुरा और मणिपुर को छोड़ कर शेष सभी वर्तमान राज्य कभी असम के पर्वतीय जिले रहे हैं। पिछले कई वर्षों से सामाजिक अनिवार्यताओं के कारण असम राज्य को विभिन्न राज्यों में विभाजित कर नगा, खासी, जयंतिया, गारो और मिज़ो पर्वतीय जिले बनाए गए। केन्द्र इन राज्यों के वार्षिक बजट में सहायता प्रदान करता है क्योंकि इनकी राजस्व सृजन क्षमता इन जिलों की मांग और आवश्यकताएं पूरी करने के लिए अपर्याप्त होती हैं। स्वाभाविक है कि इन राज्यों की सरकारें उसी पार्टी के प्रति अपनी वफादारी रखने को मजबूर रहती हैं जो केन्द्र में सत्ता में रहती है। ऐसा कई बार हुआ है कि पूरी की पूरी सरकार ने रातोंरात उस पार्टी के प्रति अपनी वफादारी बदल दी, जो केन्द्र में सत्ता में आ गई।

राजनैतिक पटल पर बदलती दृश्यावली के साथ पूर्वोत्तर के लोगों ने कांग्रेस पार्टी के विकल्प के रूप में भाजपा की तरफ निहारना शुरू कर दिया है। इसको देखते हुए अगामी चुनाव में भाजपा के पास एक अवसर है कि वह अपनी संख्या में वृद्धि करे और अपना इन राज्यों में अपना जन-समर्थन बढ़ाए। इन चुनावी तीन राज्यों में से कांग्रेस केवल एक राज्य मेघालय में सत्ता में है, जबकि नगालैण्ड और त्रिपुरा का शासन क्रमशः नगा पीपुल्स फ्रंट और सीपीएम-नीत वामपंथी मोर्चा के हाथों में है।

त्रिपुरा

त्रिपुरा में जो प्रमुख राजनीतिक पार्टियां चुनावी मैदान में हैं, वे हैं- सीपीआई-एम-नीत वामपंथी मोर्चा, भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस तथा इसके सहयोगी दल इण्डिजीनस नेशनल पार्टी आफ त्रिपुरा। त्रिपुरा के चुनावों में वामपंथी पार्टियों के लिए अपनी सत्ता कायम रखना सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि वामपंथी पार्टियों के पास अब एक यही राज्य बचा रह गया है, जहां वह सत्ता में है क्योंकि ये पार्टियां पहले ही 2011 में पश्चिमी बंगाल में तृणमूल कांग्रेस और केरल में यूडीएफ के हाथों पराजित हो चुकी है।

दलगत स्थिति 2008

दल का नाम	स्थान
भाकपा	1
माकपा	46
कांग्रेस	10
आईएनपीटी	1
आरएससी	2

त्रिपुरा में इस समय हो रहे चुनावों से पहले ही कांग्रेस पार्टी को गहरा झटका लगा है क्योंकि यहां 32 आदिवासी नेताओं ने विद्रोह का झण्डा ऊंचा कर पार्टी छोड़कर अपने उम्मीदवार खड़े कर दिए हैं। पार्टी के आदिवासी विभाग के चेयरमैन और जनरल सेक्रेटरी फणि भूषण देवव्रत कोलोई उन 32 लोगों में शामिल हैं जिन्होंने कांग्रेस अध्यक्षा को अपना त्यागपत्र भेज दिया है। असंतुष्ट आदिवासी नेताओं ने 21 विधानसभा खण्डों में अपने 21 उम्मीदवार खड़े किए हैं जिनमें से 18 सीटें आदिवासियों के लिए आरक्षित हैं। 30 आरक्षित सीटों में से कांग्रेस-आईएनपीटी गठबंधन ने 2008 में केवल एक सीट ही जीती थी। फिर भी, पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस और कांग्रेस के बीच खिचखिच होने के बावजूद भी तृणमूल कांग्रेस राज्य के आगामी चुनावों में कांग्रेस का समर्थन करेगी।

इस बार सत्ताधारी वामपंथी मोर्चे की हालत काफी खस्ता नजर आ रही है। पश्चिम बंगाल और केरल में जोरदार पराजय के कारण वामपंथी मोर्चा भारत की राजनीति से लगभग समाप्त प्राय: दिखाई पड़ रहा है। अत: त्रिपुरा में सत्ताधारी सीपीआई-एम में खींचतान साफ दिखाई पड़ता है। किन्तु, यह स्पष्ट है कि इस बार सीपीआई-एम वामपंथी मोर्चे के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए लड़ रही है क्योंकि आज देश के राजनीतिक पटल पर तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं।

त्रिपुरा में पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा और यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट ने संयुक्त रूप से चुनाव लड़ा था। परन्तु, इस बार भाजपा ने अकेले चुनावी मैदान में लड़ने का निर्णय लिया है और उसका प्रयास है कि वह त्रिपुरा विधानसभा में अपना खाता खोले। स्पष्ट है कि पार्टी के बहुत से वरिष्ठ नेता राज्य में अपने उम्मीदवारों के लिए प्रचार करेंगे और वामपंथी मोर्चे के शासन में विकास मोर्चे पर बनी दयनीय दुर्दशा के बारे में लोगों को अवगत कराएंगे।

नगालैण्ड

नगालैण्ड में विधानसभा चुनाव का प्रचार बड़ी शांत भाव से शुरू हुआ है तो हम देख रहे हैं कि पिछले वर्ष जिन 60 नगालैण्ड के विधायकों ने जिस जाइंट लेजिस्लेचर फोरम (जेएलएफ) को स्थापित किया, उसके सिद्धांत और मूल भावनाएं ह्रास की तरफ बढ़ रही हैं। यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि जेएलएफ का गठन केन्द्र सरकार पर चल रही नगा शांति प्रक्रिया को जारी रखने के लिए दबाव के रूप में किया गया था। किन्तु कांग्रेस के धोखे के कारण नागा शांति प्रक्रिया अपेक्षित ढंग से चल नहीं पा रही थी।

दलगत स्थिति 2008

दल का नाम	स्थान
भाजपा	2
स्वतंत्र	7
कांग्रेस	23
एनपीएफ	26
राकांपा	2

नगालैण्ड में, एनएससीएन-आई एम के बीच समझौता सत्ताधारी पार्टी एनपीएफ और केन्द्र में कांग्रेस के बीच प्रमुख लड़ाई की जड़ रही है। नगालैण्ड में नेतागण चाहते थे कि चुनावों को टाला जाए क्योंकि वे एनएससीएन मुद्दे पर समझौता करना चाहते थे। इसी बीच, नगा पीपुल्स पार्टी (एनपीएफ) ने आरोप लगाया है कि कांग्रेस ने नगा मुद्दे के एजेण्डे का अपहरण करने का हर तरह का प्रयास किया है जबकि उसने किसी भी समस्या का समाधान करने के लिए जरा भी ईमानदारी का परिचय नहीं दिया। एनपीएफ ने आगे कहा है कि कांग्रेस को लोगों को भरमा कर यह नहीं समझ लेना चाहिए कि वे उसे ही वोट देंगे। इससे पूर्व, एनपीएफ ने कांग्रेस नेताओं पर मणिपुर के मुख्य मंत्री इबोबी सिंह के साथ यारी निभाने का भी आरोप लगाया था। एनपीएफ का मानना है कि इबोबी सिंह नागाओं के कट्टर शत्रु है। एनपीएफ-जेएलएफ और कांग्रेस के बीच यह द्वंद्व पहले ही इतना भड़क चुका है कि चुनावी संध्या पर नगालैण्ड का वातावरण खराब हो गया है और इस बार कांग्रेस के लिए मैदान मारना दुश्वार हो गया है।

जहां तक, भाजपा का प्रश्न है, जिसने पिछली बार दो सीटें जीती थीं, अब उसका अथक प्रयास होगा कि वह नगालैण्ड में अधिकाधिक उम्मीदवार खड़े कर अपनी उपस्थिति दर्ज करा सके। भाजपा और एनपीएफ ने चुनाव-पूर्व गठबंधन करने का फैसला किया है। जेडी(यू) के साथ मिल जाने से तीन पार्टियों का गठबंधन बन गया है जिसका नाम है- डेमोक्रेटिक एलाइंस ऑफ नगालैण्ड (डीएनएन), जो आने वाले नगालैण्ड विधानसभा चुनाव लड़ेगी। न्यूनतम साझा कार्यक्रम के अन्तर्गत डीएएन सामूहिक रूप से चुनाव लड़ेगी ताकि एक जन हितकारी सरकार बने जो नगालैण्ड के विकास और प्रगति को तेज गति देगी और शांति प्रक्रिया आरम्भ कर राज्य में स्थायी शांति पैदा करेगी। इसी बीच, भाजपा ने एक चुनाव समिति का गठन किया है जिसमें श्री एम-चूबा

आओ, पदेन होंगे और श्री के. मेदोन अंगामी इसके संयोजक होंगे।

इन्हीं दिनों पूर्व भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने नगौलण्ड का व्यापक दौरा किया है और उन्होंने राज्य में अनेक स्थानों पर रैलियों को सम्बोधित किया है। इससे भाजपा के लिए एक ठोस मंच की स्थापना हुई है और भाजपा नगालैण्ड में कांग्रेस तथा एनपीएफ के विकल्प में अपने सहयोगी दलों के साथ सत्ता में आने का प्रयास करेगी।

मेघालय

चुनावी संध्या पर मेघालय में राजनैतिक विच्छेद और मिलन का दृश्य बनता-बिगड़ता रहा है। कांग्रेस ने मेघालय में 60 सदस्यीय विधानसभा में अपने उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। पार्टी द्वारा जारी सूची में 55 उम्मीदवार अनुसूचित जनजातियों के हैं। किन्तु, दूसरी तरफ एएनवीसी ने आरोप लगाया है कि कांग्रेस ने आटोनॉमस कौंसिल के लिए एएनवीसी द्वारा उठाए मुद्दे का कोई समाधान नहीं किया है और धोखा दिया है। अत: विद्रोही एएनवीसी ने गारोलैण्ड आटोनॉमस कौंसिल के गठन की मांग कर दी है। उल्लेखनीय है कि एएनवीसी गारोलैण्ड आटोनॉमस कौंसिल के गठन के लिए लड़ने वाला एक शक्तिशाली विद्रोही ग्रुप है, जिसने 23 जुलाई 2004 को केन्द्र और राज्य सरकारों के साथ त्रिपक्षीय विरामयुद्ध किया था।

यह ग्रुप पश्चिमी मेघालय में गारो पर्वतीय क्षेत्र के निर्धन जिलों में काम करता है और इसने युद्ध-विराम समझौते के बाद असम में बोडोलैण्ड टेरिटोरियल कौंसिल की तरह ही एक अलग गारोलैण्ड राज्य के गठन को घटा कर आटोनॉमस कौंसिल बनाने पर सहमत हो गई थी। परन्तु, बर्नार्ड एन. मारक के नेतृत्व में एक अलग हुए ग्रुप एएनवीसी-बी अपनी ग्रेटर गारोलैण्ड की मांग पर अड़े रहे। अब यह दोनों ही ग्रुप सक्रिय है जो ऑटोनॉमस कौंसिल की मांग कर रहे हैं, जबकि ऑटोनॉमस कौंसिल के गठन के लिए केन्द्र की कांग्रेस पार्टी विरोध कर रही है। इसके कारण कांग्रेस असमंजस में पड़ गई है और उसे भाजपा-एनपीपी-नीत विपक्ष और विपक्ष की गम्भीर चुनौती का सामना करना पड़ेगा।

दलगत स्थिति 2008

दल का नाम	स्थान
केएचएनएएम	1
भाजपा	1
एचएसपीडीपी	2
स्वतंत्र	5
कांग्रेस	25
राकांपा	15
यूडीपी	11

दूसरी तरफ, यह स्थिति भी है कि पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्री पीए संगमा ने राष्ट्रपति चुनाव लड़ने के लिए पिछले वर्ष एनसीपी से सम्बद्ध विच्छेद कर लिए थे और उन्होंने नेशनल पीपुल्स पार्टी (एनपीपी) शुरू की है तथा भाजपा-नीत एनडीए के साथ हाथ मिला लिया है।

एनपीपी मेघालय में भाजपा के साथ विधानसभा चुनाव लड़ेगी। निश्चित ही भाजपा और एनपीपी गठबंधन सत्ताधारी कांग्रेस के लिए बड़ी चुनौती होगी। एनपीपी के भाजपा-नीत एनडीए का हिस्सा बन जाने से एनडीए को निश्चित मजबूती मिलेगी, जिसका प्रभाव न केवल मेघालय में बल्कि आगामी पूर्वोत्तर चुनावों में पूरी राजनीति पर भी पड़ेगा।

जहां तक पिछली राज्य विधानसभाओं में चुनावी परिणामों की बात है, वह यही है कि इन सभी तीन राज्यों में 60-60 सीटें थी और भाजपा के मेघालय में एक सीट पर विजय प्राप्त की तो नगालैण्ड में उसकी दो सीटें रहीं तथा त्रिपुरा में उसके पास कोई सीट नहीं रही थी। किन्तु इस बार भाजपा मेघालय, त्रिपुरा और नगालैण्ड के विधानसभा चुनावों के लिए तैयार है और इन तीन पूर्वोत्तर राज्यों में सम्भावित गठबंधन पर नजर रख रही है।

भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मुख्तार अब्बास नकवी ने स्पष्ट किया है कि पार्टी चुनाव समिति ने उम्मीदवारों की सूची लगभग तैयार कर ली है और नगालैण्ड में, कुछ पार्टियों के साथ समझौते की प्रक्रिया चल रही है, जिन्होंने मिल कर चुनाव लड़ने की इच्छा प्रगट की है।

मेघालय में भाजपा ने नेशनल पीपुल्स पार्टी के साथ समझौते पर पहुंची है तो उधर त्रिपुरा में हम अकेले लड़ने के लिए तैयार है। श्री नकवी ने कहा कि भाजपा सर्वोकृष्ट रणनीति अपना कर चलेगी और वरिष्ठ पार्टी नेतागण इन राज्यों में प्रचार करने के लिए पहुंचेंगे जिससे हमें आशा है कि पूर्वोत्तर में पार्टी की शक्ति में बढ़ोतरी होगी।

गुजरात में भव्य और शानदार जीत के बाद भाजपा पूर्वोत्तर क्षेत्र में अपना आधार विस्तार करने की तरफ झुकी है। भाजपा ने पहले ही नगालैण्ड में नागा पीपुल्स फ्रंट के चुनाव-पूर्व समझौता कर लिया है और मेघालय में पीए संगमा के नेतृत्व में गठित एनपीपी के साथ गठबंधन हो गया है।

इन चुनावी राज्यों में क्षेत्रीय क्षत्रपों की सीटें साझा करने के फार्मूले और पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास में भाजपा के निरंतर प्रयासों से लाभ होने की पूरी सम्भावना है, जिससे पूर्वोत्तर क्षेत्र में भाजपा-नीत एनडीए शक्तिशाली बनेगा। ■

नए प्रदेश भाजपा अध्यक्ष

भारतीय जनता पार्टी एक विशिष्ट राजनीतिक दल है। विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में जहां अधिकांश राजनीतिक दलों में परिवारवाद का वर्चस्व है और वर्षों से एक ही व्यक्ति प्रमुख पद पर काबिज हैं वहीं देश की प्रमुख विपक्षी पार्टी भाजपा में आंतरिक लोकतंत्र का होना, इसकी प्रमुख विशेषता है। यहां मंडल स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर नियमित रूप से चुनाव होते हैं। इस बार भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री थावरचंद गहलोत केन्द्रीय चुनाव अधिकारी थे। विदित हो कि गत 23 जनवरी 2013 को पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर श्री राजनाथ सिंह निर्विरोध निर्वाचित हुए। इसके साथ ही अब तक 18 राज्यों के अध्यक्ष भी निर्वाचित हो चुके हैं। उल्लेखनीय बात यह है कि सभी चुनाव सर्वसम्मति से संपन्न हुए। हम यहां संक्षिप्त विवरण प्रकाशित कर रहे हैं :

उत्तर प्रदेश : श्री लक्ष्मीकांत बाजपेई

उत्तर प्रदेश में श्री लक्ष्मीकांत वाजपेई 1 दिसम्बर 2012 को भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इससे पहले वह मनोनीत प्रदेश अध्यक्ष थे। पार्टी की प्रान्तीय परिषद की बैठक में अध्यक्ष पद के लिये श्री बाजपेई के निर्विरोध निर्वाचन की औपचारिक घोषणा की गयी। लखनऊ में पार्टी की प्रांतीय परिषद के सम्मेलन में केंद्रीय चुनाव अधिकारी श्री कप्तान सिंह सोलंकी ने इसकी औपचारिक घोषणा की।

बिहार : श्री मंगल पांडेय

बिहार प्रदेश भाजपा के महामंत्री व बिहार विधान परिषद के सदस्य श्री मंगल पांडेय बिहार प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के नए अध्यक्ष चुने गए। केन्द्रीय चुनाव अधिकारी व राष्ट्रीय सचिव सुश्री आरती मेहरा ने 17 जनवरी 2013 को इसकी औपचारिक घोषणा करते हुए कहा कि बिहार भाजपा के अध्यक्ष पद के लिए श्री मंगल पांडेय को सर्वसम्मति से चुना गया है।

पंजाब : श्री कमल शर्मा

पंजाब प्रदेश भाजपा के प्रदेश महासचिव श्री कमल शर्मा को सर्वसम्मति से प्रदेश अध्यक्ष चुना गया। गत 15 जनवरी को निर्वाचन के अवसर पर केन्द्रीय चुनाव अधिकारी श्री रामनाथ कोविंद, पंजाब प्रदेश प्रभारी श्री शांता कुमार, राष्ट्रीय महामंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा, श्री बलरामजी दास टंडन, श्री मदन मोहन मित्तल, प्रो. राजिंदर भंडारी आदि उपस्थित थे।

चंडीगढ़ : श्री संजय टंडन

भारतीय जनता पार्टी, चंडीगढ़ के निवर्तमान अध्यक्ष श्री संजय टंडन दूसरी बार अध्यक्ष चुने गए। गत 15 जनवरी को पार्टी कार्यालय 'कमलम' में अध्यक्ष पद के चुनाव में उन्हें निर्विरोध प्रदेश अध्यक्ष चुना गया। श्री टंडन के चुने जाने की घोषणा केंद्रीय चुनाव अधिकारी श्री ओमप्रकाश धनकड़ ने भाजपा राष्ट्रीय महासचिव श्री जगत प्रकाश नड्डा व प्रदेश चुनाव अधिकारी राजेश गुप्ता की उपस्थिति में की।

जम्मू-कश्मीर : श्री जुगल किशोर शर्मा

गत 21 दिसम्बर 2012 को भाजपा नेता श्री जुगल किशोर शर्मा प्रदेश भाजपा अध्यक्ष निर्वाचित हुए। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता व चुनाव अधिकारी श्री राजीव प्रताप रूड़ी ने कहा कि श्री जुगल किशोर शर्मा जम्मू-कश्मीर प्रदेश भाजपा के नए अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित हुए हैं। जम्मू जिला स्थित नागोत्रा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से दो बार विधायक चुने जा चुके श्री शर्मा ने कहा कि मैं प्रदेश में पार्टी को मजबूत करने के लिए अथक

परिश्रम करूंगा।

पश्चिम बंगाल : श्री राहुल सिन्हा

पश्चिम बंगाल प्रदेश भाजपा के निवर्तमान अध्यक्ष श्री राहुल सिन्हा को दूसरे कार्यकाल के लिए दोबारा चुना लिया गया। गत 6 अक्टूबर 2012 को चुनाव अधिकारी श्री हरेंन्द्र प्रताप ने भाजपा राज्य सांगठनिक चुनाव के नतीजे की घोषणा की। दोबारा अध्यक्ष चुने जाने के बाद श्री सिन्हा ने कांग्रेस पर महंगाई बढ़ाने वाली नीतियों के निर्माण का आरोप लगाया।

तमिलनाडु : श्री पॉन राधाकृष्णन

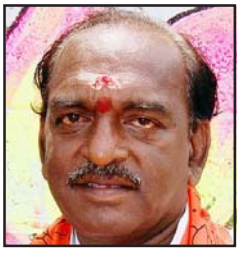

तमिलनाडु प्रदेश भाजपा अध्यक्ष के निवर्तमान अध्यक्ष श्री पॉन राधाकृष्णन अगले सत्र के लिए दोबारा प्रदेश अध्यक्ष चुन लिए गए। गत 28 दिसम्बर 2012 को चुनाव अधिकारी और पूर्व मंत्री श्री बंडारू दत्तात्रेय ने 1999 में श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली सरकार में केन्द्रीय मंत्री रहे श्री राधाकृष्णन के प्रदेश अध्यक्ष निर्वाचित होने की घोषणा की। इस अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय सचिव श्री मुरलीधर राव, प्रदेश प्रभारी और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री एल गणेशन और श्री सी.पी. राधाकृष्णन सहित वरिष्ठ नेता उपस्थित थे।

असम : सर्बानंदा सोनोवाल

लोकसभा के पूर्व सांसद श्री सर्बानंदा सोनोवाल भारतीय जनता पार्टी, असम प्रदेश के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। गत 8 नवम्बर 2012 को भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री विजय गोयल ने असम प्रदेश भाजपा के नए अध्यक्ष के रूप में श्री सोनोवाल के नाम की घोषणा की। श्री सोनोवाल 1992 से 1999 तक अखिल असम स्टूडेंट्स यूनियन (आसू) के अध्यक्ष थे। वह 2001 में मोरन निर्वाचन क्षेत्र से राज्य विधानसभा के लिए चुने गए थे और 2004 में डिब्रूगढ़ सीट से लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए थे।

सिक्किम : श्री पदम बहादुर छेत्री

भाजपा नेता श्री पदम बहादुर छेत्री सिक्किम प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। गत 18 दिसम्बर 2012 को चुनाव अधिकारी व भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती किरण घई की देखरेख में यह चुनाव संपन्न हुआ।

अंडमान-निकोबार : श्री विशाल जौली

भाजपा नेता श्री विशाल जौली अंडमान-निकोबार प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। गत 8 जनवरी 2013 को चुनाव अधिकारी श्री ला. गणेशन ने इसकी सार्वजनिक घोषणा की।

मणिपुर : श्री थ. चौअवा सिंह

भाजपा नेता श्री थ. चौअवा सिंह मणिपुर प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। गत 16 दिसम्बर 2012 को चुनाव अधिकारी व भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री प्रकाश जावडेकर ने इसकी औपचारिक घोषणा की।

लक्षद्वीप : डॉ. के. पी. मुथु कोया

भाजपा नेता डॉ. के. पी. मुथु कोया लक्षद्वीप प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष चुने गए। गत 15 दिसम्बर 2012 को चुनाव अधिकारी श्री श्रीधरन पिल्लई ने इसकी सार्वजनिक घोषणा की।

पांडिचेरी : श्री एम. विश्वेस्वर्ण

भाजपा नेता श्री एम. विश्वेस्वर्ण पांडिचेरी प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। गत 2 जनवरी 2013 को चुनाव अधिकारी श्री एच. राजा ने इसकी औपचारिक घोषणा की।

त्रिपुरा : श्री सुधींद्र दासगुप्ता

भाजपा नेता श्री सुधींद्र दासगुप्ता त्रिपुरा प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष चुने गए। गत 23 दिसम्बर 2012 को चुनाव अधिकारी व भाजपा के राष्ट्रीय सचिव श्री भूपेन्द्र यादव ने इसकी औपचारिक घोषणा की।

गोवा : श्री विनय दिनू तेंदुलकर

भाजपा नेता श्री विनय दिनू तेंदुलकर गोवा प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष चुने गए। गत 18 नवम्बर 2012 को चुनाव अधिकारी व भाजपा की राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी ने इसकी सार्वजनिक घोषणा की।

दादर नगर हवेली : श्री दिग्विजय परमार

भाजपा नेता श्री दिग्विजय परमार दादर नगर हवेली प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। गत 6 नवम्बर 2012 को चुनाव अधिकारी व भाजपा के राष्ट्रीय सचिव श्री किरीट सोमैया की देखरेख में यह चुनाव संपन्न हुआ। ■

जनक्रांति पार्टी (राष्ट्रवादी) का भाजपा में विलय

गत 22 जनवरी 2013 को लखनऊ में आयोजित अटल शंखनाद रैली के मौके पर स्थानीय झूलेलाल पार्क में जनक्रांति पार्टी (राष्ट्रवादी) का भाजपा में विलय हो गया। इसकी घोषणा उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री कल्याण सिंह के पुत्र एवं जनक्रांति पार्टी (राष्ट्रवादी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजवीर सिंह ने की। इस अवसर पर आयोजित रैली में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने आतंकवाद पर दिए गए गृहमंत्री के बयान पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कहा कि गृहमंत्री ने हिंदू समाज का अपमान किया है। इससे पहले चिदंबरम भी भगवा आतंकवाद कह कर हिंदुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचा चुके हैं। इस विलय के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं में जबरदस्त उत्साह दिखा। भीड़ से जय श्री राम, वंदेमातरम्, भाजपा जिंदाबाद जैसे नारे रह रह कर गूंजते रहें। केंद्र में सत्तासीन होने को उत्तर प्रदेश से 50 सांसद जिताने का लक्ष्य भी निर्धारित किया। भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री कल्याण सिंह को अपने से बेहतर मुख्यमंत्री बताते हुए रैली को राजनीति के लिए टर्निंग रैली बताया। इस मौके पर भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मुरली मनोहर जोशी, मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री सुश्री उमा भारती, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मुख्तार अब्बास नकवी एवं श्री कलराज मिश्र ने भी अपने विचार व्यक्त किए। ■

पृष्ठ 22 का शेष...

से भी हथियार और गोले-बारूद प्राप्त होते हैं। अभी हाल तक नक्सलियों को लिबरेशन टाईगर्स इलम (एलटीटीई) से सम्पर्क थे। जब एलटीटीई श्रीलंका के उत्तर-पूर्व में सक्रिय थे तब नक्सलियों को प्राय: प्रशिक्षण और गोला-बारूद तमिल ईलम से प्राप्त होते थे। इस तरह की गतिविधियां प्राय: आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्रों में होती थी। चीन अपना हथियार प्राय: भारत में पूर्वोत्तर क्षेत्रों में सक्रिय उग्रवादी संगठन के द्वारा नक्सलियों को उपलब्ध करवाता है। इस गतिविधि में मुख्यत: चीन की पीपुल्स लीबरेशन आर्मी (पी.एल.ए) लिप्त है।

भारत के खनिज समृद्ध इलाके में ही माओवादी अधिक प्रभावशाली है। इन इलाकों में अच्छी-खासी उगाही भी करते हैं। भारत के नक्सल प्रभावित क्षेत्र एशिया के दो प्रमुख अवैध अफीम उत्पादक क्षेत्र गोल्डन क्रेसेन्ट और गोल्डन ट्रांइग्ल के बीच स्थित है। ये लोगों से जबरन अफीम का उत्पादन करवाते हैं और सीमापार ये अवैध ड्रग्स और अफीम के धंधे में सम्मलित है। इनमें इनको मदद चीन-पाकिस्तान और नेपाल में स्थित स्टेट और नॉन स्टेट एक्टर से मदद मिलती है। इस नक्सल से लड़ने के लिए एक साथ सरकार को कई मोर्चे पर लड़ना होगा। पहला जो नक्सल से लड़ने वाली केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल है उसकी शिकायत रहती है कि हमे इंटेलिजेंस के लिए लोकल पुलिस पर निर्भर रहना पड़ता है। उनका मानना है कि हमारा अपना इंटेलिजेंस रहेगा तो हम अच्छा कार्य कर सकेंगे। केन्द्रीय पुलिस फोर्स के इंटेलिजेंस सम्बंधित शिकायत को दूर करना होगा। दूसरा नक्सल प्रभावित क्षेत्रों का तेजी से विकास करना होगा और उन्हें विकास की मुख्य धारा से जोड़ा जा सके। तीसरा जो महत्वपूर्ण है सीमा पार से माओवादियों को मिलने वाली सहायता को खत्म करने के लिए सीमा पर चौकसी बढ़ानी होगी। ■